# सर्वहारा दृष्टिकोण

सोशलिस्ट यूनिटी सेन्टर ऑफ इण्डिया (कम्युनिस्ट) का मुखपत्र (पाक्षिक)

वर्ष-29 अंक-15 | 7 से 21 अगस्त, 2014 | मुख्य संपादक - कॉमरेड कृष्ण चक्रवर्ती | मूल्य : 2 रुपये


## कॉ. शिवदास घोष लाल सलाम

5 अगस्त 1923 — 5 अगस्त 1976

## फासीवाद और वाम–जनवादी आन्दोलन में नैतिकता का संकट

5 अगस्त का दिन सर्वहारा के महान नेता कॉमरेड शिवदास घोष का स्मृति दिवस है। बीजेपी-संघ परिवार के केन्द्र में सत्तासीन होने के चलते देश में फासीवादी शासन का ख़तरा कई गुना बढ़ गया है। फासीवाद के बारे में कॉमरेड शिवदास घोष ने बार-बार चेतावनी दी थी, फासीवाद का क्या मायना है, किस प्रकार इसकी जमीन तैयार होती है। इस सम्बन्ध में उनका सारगर्भित विश्लेषण है। इस तरह की दो चर्चाओं के कुछ अंश यहाँ दिए जा रहे हैं।

... फासीवाद क्या है–इसे अच्छी तरह समझना होगा। फासीवाद के बारे में हमारी पार्टी के वक्तव्य को हम 1949 से बार बार बोलते आ रहे है। लोगों का एक तबका है जो प्रशासन के उग्र रूप को ही फासीवाद कहता है, तानाशाही को ही फासीवाद कहता है। याद रखें, तानाशाही–मिलिट्री तानाशाही होती है, तानाशाही तख्ता पलट के जरिए भी कायम होती है। इसके अलावा, अत्याचार सभी जनस्वार्थविरोधी प्रशासनिक व्यवस्थाओं में होता है, औपनिवेशिक देशों पर साम्राज्यवादी करते हैं। लेकिन फासीवाद उससे भी भयंकर होता है। सिर्फ अत्याचार किसी देश का उतना नुकसान नहीं कर सकता है। लेकिन फासीवाद होता है एक सर्वांगीण प्रतिक्रान्तिकारी अभ्युत्थान। एक तरफ यह मनुष्य की चिन्तन-भावना आदि को मार कर उसे आत्मकेन्द्रित कर देता है, मनुष्य की ज्ञानविद्या बुद्धि को तकनीकमुखी बना देता है अर्थात देश में टैक्नोक्रेटों का एक तबका (शिक्षित कारीगर) तैयार करता है–जो मानवीय उद्देश्य से पूरी तरह विमुख होता है और जिनमें लोगों और समाज के प्रति कोई दायित्वबोध नहीं होता है। जो नौकरी और गुलामी को ही सब कुछ मान लेते हैं, पैसे के बदले में वे कुछ भी कर सकते हैं और इसी प्रकार विज्ञान के अभ्यास एवं विद्या को वे प्रवाहित करते हैं। दूसरी तरफ हर तरह के अध्यात्मवाद, इस मामले में हर तरह के कुसंस्कार, हर तरह की तर्कहीन मानसिकता और अन्धता को बढ़ावा देते हैं। फासीवाद है अध्यात्मवाद, अंधताग्रस्त भावना-धारणा एवं तर्कहीनता के साथ तकनीकी वैज्ञानिक विद्या का एक विचित्र समिश्रण। इस तरह की घटना जब घटती है तब देश में तर्कसंगत मन मर जाता है। इसीलिए वामपंथी आन्दोलन के संबंध में भी मैंने चेतावनी देते हुए कहा था, जो वामपंथी अपनी ताकत बढ़ाने के लिए चर्चा-बहस का दरवाजा बन्द करके बाहुबल प्रयोग करने की नीति अपनाते हैं क्योंकि उनकी ताकत और दलबल

(शेष पृष्ठ 2 पर)

## बिजली के दामों में वृद्धि के खिलाफ दिल्ली में विक्षोभ प्रदर्शन

दिल्ली में डीईआरसी द्वारा बिजली के दाम बढ़ा दिये गये हैं। ग्राहकों पर 2.5 से 25 प्रतिशत तक का अतिरिक्त बोझ डाल दिया गया है। बिजली वितरक निजी कम्पनियाँ इससे 1500 करोड़ रुपये ज्यादा मुनाफा कमायेंगी।

इस दाम वृद्धि के विरोध में एसयूसीआई(सी) दिल्ली राज्य सांगठनिक कमेटी आन्दोलन में कूद पड़ी है। 18 जुलाई को तीस हजारी मेट्रो स्टेशन से लेफ्टीनेंट गवर्नर दफ्तर की ओर जुलूस निकाला गया। पुलिस द्वारा जुलूस को बीच में ही रोक दिये जाने पर वहीं विरोध सभा हुई। वक्ताओं में एसयूसीआई(सी) दिल्ली राज्य सांगठनिक कमेटी सदस्यों कॉमरेड्स आर. के. शर्मा, के. सी. तिवारी, हरीश त्यागी, मैनेजर चौरसिया प्रमुख थे। लेफ्टीनेंट गवर्नर को भेजे गये ज्ञापन में माँग की गई कि दिल्ली बिजली वितरण कम्पनियों के खिलाफ हिसाब खातों में जालसाजी के मामले का जब तक हाईकोर्ट और सीएजी में फैसला नहीं हो जाता तब तक बिजली के दाम न बढ़ाये जाएं।

प्रदर्शनकारियों को सम्बोधित करते हुए का. आर.के. शर्मा,

## यहूदीवादी इस्राइल और अमेरिका साम्राज्यवादियों के नापाक गठजोड़ को परास्त करें

### केन्द्रीय कमेटी

एसयूसीआई (सी) की केन्द्रीय कमेटी ने 22 जुलाई को जारी एक बयान में कहा कि गाजा पट्टी में निराश्रय फिलस्तीनियों पर यहूदीवादी इस्राइल के जमीनी और हवाई हमले की हम घोर निन्दा करते हैं जिसे बड़ी-बड़ी साम्राज्यवादी ताकतों, खासकर अमेरिकी साम्राज्यवादियों से हर तरह का नैतिक और सामरिक समर्थन और प्रोत्साहन मिल रहा है। यहूदीवादी इस्राइल के इस हालिया बर्बर हमले ने बेहरम प्रतिहिंसात्मक कार्यकलापों के अपने तमाम पुराने रिकार्ड तोड़ दिए हैं। यह खुद में निरंकुश राजकीय आतंकवाद का द्योतक है जिसे मासूम नागरिकों की पूरी आबादी को आतंकित करने के लिए डिजाइन किया गया है। यह एक दम्भपूर्ण तूफानी हमलों की घोषणा है कि "हमास और इसके जैसों के खिलाफ व्यापक युद्ध" तब तक चलाया जाएगा जब तक कि "इस ऑपरेशन के तमाम लक्ष्य हासिल नहीं कर लिए जाते हैं"। फिलस्तीन में लोगों के जनादेश से हमास जब से सत्तासीन हुआ है तभी से इसके नेता-कार्यकर्ताओं की हत्या के जो निरन्तर एक पर एक प्रयास यहूदीवादी इस्राइल द्वारा किए जा रहे हैं उनके चरम पदक्षेप के तौर ही इस्राइली हुकूमत की यह लूटमार उभर कर आई है। लम्बे अर्से से, विश्व जनमत की उपेक्षा करते हुए यहूदीवादी इस्राइल फिलस्तीनियों के गाजा सहित फिलस्तीन की भूमि के साथ-साथ एक सार्वभौम स्वतन्त्र फिलस्तीन देश के उनके न्यायसंगत दावे को नकारता आ रहा है। इसके बजाए, यह गैरकानूनी तरीके से फिलस्तीन की भूमि पर कब्जा जमाए हुए है और शान्तिपूर्ण बातचीत के माध्यम से मुद्दे के मैत्रीपूर्ण समाधान का कोई रुझान नहीं दिखा रहा है। बल्कि इस्राइली शासक झगड़े को जिन्दा रखे हुए है और क्रूर उद्दण्डता से फिलस्तीनियों पर रह रह कर घातक हमले कर रहा है। अमेरिका समर्थित मिस्र की सरकार का युद्धविराम का हालिया प्रस्ताव हमास को धमकाने और देशभक्त फिलस्तीनियों को आक्रमणकारी इस्राइली हुकूमत के आगे घुटने टेकने को मजबूर करने की एक शातिराना चाल है। हमास द्वारा इसे ठुकरा दिया जाना बिल्कुल जायज है।

भारत की इस्राइल के साथ दोस्ताना रिश्ते बनाये रखने की नीति के मुताबिक इस झगड़े में भारत द्वारा किसी का पक्ष लिए जाने का सवाल ही नहीं है कह कर बीजेपी-नीत भारत सरकार ने जो बेहद बेतुका स्टैण्ड लिया है, उसकी भी हम घोर निन्दा करते हैं। यह भी समान रूप से निन्दनीय है कि भारतीय विदेशमंत्री जिसने इस्राइली हमले की निन्दा करते हुए संसद में प्रस्ताव पारित करने की बात खारिज कर दी और मिस्र की मध्यस्थता वाले युद्ध विराम को स्वीकार न किए जाने के लिए हमास की निन्दा की है जबकि वास्तव में फिलस्तीन में इस्राइली सैनिकबलों द्वारा किये गए नरसंहार के खिलाफ एक शब्द भी नहीं बोला।

फिलस्तीनियों के खिलाफ हमलों को तुरन्त बन्द करने की हम मांग करते हैं और संघर्षशील फिलस्तीनियों के साथ मजबूत एकजुटता का इजहार करने और सक्रिय समर्थन में उनके साथ खड़े होने का आह्वान करते हैं। यह भी समझना चाहिए कि गाजा पट्टी के लोगों का संघर्ष विश्व साम्राज्यवाद-विरोधी आन्दोलन का अभिन्न और आवश्यक अंग है। विश्व भर में पूँजीवाद-साम्राज्यवाद के खिलाफ जनसंघर्षों और क्रान्तिकारी आन्दोलन को प्रोत्साहन देने के लिए, यहूदीवादी इस्राइल और उनके आका अमेरिकी साम्राज्यवादियों के नापाक गठजोड़ को भी परास्त करना जरूरी है। अन्यायपूर्ण आक्रमण को तुरन्त बन्द कराने, गाजा पट्टी व कब्जा किए गए अन्य इलाकों से सैन्य बलों को वापस बुलाने और फिलस्तीनियों की न्यायसंगत मांगों को पूरा करने के लक्ष्य से निर्मम यहूदीवादी इस्राइल और जंगखोर अमेरिकी साम्राज्यवाद पर यथासंभव जबरदस्त दबाव डालने के लिए दुनिया के हर हिस्से में संयुक्त और सतत जुझारू आन्दोलन गठित करना समय की मांग है।

# फासीवाद ...

(पृष्ठ 1 का शेष)

ज्यादा होने के चलते उन्हें ज्यादा सुविधा मिलती है, वे किसी को मुँह नहीं खोलने देते हैं, किसी की नहीं सुनते हैं, उनके कार्यकर्ता खुद की तर्क करने की मानसिकता खो देते हैं और दूसरे लोगों के अन्दर भी इस मानसिकता को नष्ट कर देते हैं–क्या वे जानते हैं कि इसकी घातक प्रतिक्रिया क्या होती है? असंभव प्रतीत होने पर भी असल सत्य यही है कि जो फासीवाद के खिलाफ बात करते हैं, जो कम्युनिज़्म की बात करते है, जो वामपंथ की बात करते हैं, संघर्ष-क्रान्ति की बात करते हैं और अत्याचार के खिलाफ लड़ रहे हैं, वे ही फिर अपने आचरण-व्यवहार के जरिए ऐसी एक तर्कहीन मानसिकता निर्मित करने में सहायता कर रहे हैं जिसकी परिणति के चलते इस वामपंथ की ही कब्र खुद जाएगी, फासीवाद का अभ्युत्थान हो जाएगा। क्योंकि, देश की धरती पर जब युक्तिवादी मन मर जाता है तभी प्रतिक्रियाशील भावना-धारणा का समाज जीवन में प्रवेश करने का सुगम रास्ता तैयार होता है। एक तरफ उग्र राष्ट्रीयतावाद के जहर से लोगों को कट्टरपंथी (अति उग्र) बना देना, दूसरी तरफ परम्परावाद एवं सतही समाजवाद, क्रान्ति और प्रगति के नारों–इन तीनों को यदि एक साथ मिला दिया जाए तो किसी देश में फासीवाद की जमीन तैयार होती है। याद रखना चाहिए कि शासक पूँजीपति वर्ग देश के बुद्धिजीवियों को विभ्रांत करके एकमात्र तभी इन तीनों को बढ़िया तरीके से मिला सकेगा जब देश में असल में ही तर्क विज्ञान के आधार पर विचार-विमर्श का मनोभाव सामाजिक जीवन से तिरोहित हो जाए। ऐसे हालात में ही फासीवाद के उभरने का सुनेहरा अवसर है। इसलिए मैंने वामपंथियों को चेतावनी देते हुए कहा था कि कांग्रेस और शासक वर्ग का दल देश के अन्दर एक तरह की तर्कहीन मानसिकता को पनपाने का प्रयास करेगा ही। वे तो चाहेंगे ही कि इस तरह की मानसिकता पनपे। लेकिन वामपंथी लोग अपने दलीय स्वार्थ के लिए भी क्यों इस तरह का आचरण करेंगे? यदि करें तो हाल फिलहाल यह उनके लिए फायदेमंद हो सकता है लेकिन भविष्य में यही उनकी कब्र खोदने का मार्ग प्रशस्त करेगा। इसीलिए तर्कहीन मनोभाव के खिलाफ संघर्ष, ज्ञान-विज्ञान-इतिहास की चर्चा, विचार-विमर्श, एक दूसरे के मत पर आलोचना-समालोचना और तर्क-वितर्क का माहौल बना रहना चाहिए। एकमात्र इस तरह का माहौल पैदा होने से ही शोषक वर्ग की किसी भी पार्टी के लिए जनसाधारण के अन्दर घुसपैठ करना बहुत कठिन हो जाता है। .....

यह बात सही है कि देश में खाद्य संकट तीव्र हो रहा है, रोजमर्रा की जरूरी चीजों के दाम बढ़ रहे हैं, औद्योगिकीकरण नहीं हो रहा है, बेरोजगारी की समस्या बढ़ रही है, बिजली नहीं है–इन तमाम समस्याओं से हम घर-घर में परेशान हो रहे है। लेकिन इससे भी बड़ा नुकसान जहाँ हो रहा है वह है नीति-नैतिकता के क्षेत्र में एवं तर्कहीन मानसिकता की बढ़ोतरी के चलते सामाजिक जीवन में जो समस्या हमारे देश में दिखाई दे रही है। याद रखें, अभाव और अत्याचार की मार चाहे जितनी भी क्यों न हो इसके जरिए किसी राष्ट्र को, कौम को मार गिराया नहीं जा सकता है। अंग्रेजों ने 200 वर्ष से ज्यादा हमें पददलित करके रखा था। लेकिन पूरे राष्ट्र को तबाह नहीं कर सके थे। वियतनाम को बमबारी कर अमेरिका ने रेगिस्तान बना दिया था और वहाँ के लोगों को एकदम जमीन के तले धकेल दिया था लेकिन पूरे देश की, कौम की रीढ़ को तोड़ नहीं पाये थे। लेकिन हमारे देश का शासक वर्ग आज देश में क्या सिर्फ आर्थिक दुर्दशा ही पैदा कर रहा है? जिस दलील से वे अपने अन्यायपूर्ण आचरण को जायज ठहरा रहे हैं, लोगों को भी इसका समर्थन करने को कह रहे हैं, पुलिस आये दिन जिस प्रकार खुल्लमखुल्ला कानून को पैरों तले रौंद रही है और राजनैतिक नेतागण और शासकगण पुलिस के इन सब क्रियाकलापों को जिस प्रकार संरक्षण देते जा रहे है; इसके अलावा, तर्कहीन मानसिकता यदि ऐसे एक स्तर पर पहुँच जाए कि देश के तरुण भी कुछ समझना न चाहें, गली-मोहल्ले में अभद्र आचरण करें और इसे देख कर वयस्क भी चुप रहें, समाज के तमाम तबके के लोगों में एक-दूसरे के विचारों के प्रति सहनशीलता का ऐसा अभाव पैदा होता रहे, तो इससे क्या साबित होता है? क्या केवल यही साबित होता है कि हमें भरपेट खाने को नहीं मिल रहा है और हम अभावग्रस्त हैं? क्या यह भी साबित नहीं होता है कि हमारी नैतिक रीढ़ टूट रही है? याद रखें, एक राष्ट्र भूखा-नंगा रह कर भी उठ खड़ा हो सकता है, भूखा रह कर भी वह लड़ता है यदि इन्सानियत रहें लेकिन फासीवाद कायम होने से इन्सान कहने लायक देश में कोई नहीं बचेगा। क्योंकि इन्सान बनने की प्रक्रिया को ही यह बाधित कर देता है।

... जिस किसी भी उच्च आदर्श की मर्मवस्तु उसके सांस्कृतिक और रुचिगत मान में निहित रहती है। सांस्कृतिक और रुचिगत मान यदि ऊँचा न रहे तो जिस किसी एक उच्च स्तर के राजनीतिक आदर्श का ढांचा भी एक बेजान देह जैसा हो जाता है। कोई शरीर देखने में बहुत खूबसूरत होने पर भी यदि उसमें जान न रहें तो वह जिस तरह बेकार है, उसे रखे रखना समाज के लिए अनिष्टकर है उसी तरह किसी एक उच्च आदर्श की बात करने पर भी यदि उससे उन्नत रुचिगत व सांस्कृतिक मान प्रतिफलित नहीं होता है तो वह भी ठीक उसी तरह समाज के लिए हानिकारक और पतनशील है। इसलिए कोई पार्टी आदर्श की बड़ी-बड़ी बातें कर रही है या नहीं यह बड़ी बात नहीं है। उनका आदर्श वास्तव में ही बड़ा है कि नहीं इसका एक बड़ा प्रमाण यह है कि उनके नेता, कार्यकर्ता और समर्थक व्यक्तिगत जीवन में, रोजमर्रा के व्यवहार में और राजनैतिक आचार-आचरण में उन्नत रुचि व सांस्कृतिक मान प्रतिफलित कर रहे हैं या नहीं। इसलिए, सीपीआई(एम) यदि वास्तव में ही क्रान्तिकारी पार्टी होती तो उसके प्रभाव में बढ़ोतरी के फलस्वरूप समाज में पूँजीवाद की अधोगति से जो पतनशीलता और नैतिकता का अध:पतन शुरू हुआ है उस पर एक कारगर रोक लग गई होती। लेकिन ऐसा दिखाई नहीं दिया। बल्कि इसके विपरीत ही होता देखा गया। कारगर रोक तो लगी ही नहीं, उल्टे, संयुक्त मोर्चा सरकार के शासन काल में जब सीपीआई(एम) का प्रभाव युवा समुदाय में जबरदस्त रूप से बढ़ गया था तब देखा गया कि उसी दौरान पहली बार छात्रों द्वारा परीक्षा में सामूहिक नकल शुरू हो गई। उनकी पार्टी में जो युवक आ रहे हैं वे जब नारा देते हैं तो उनकी भाव-भंगिमा अभद्र होती है। जो भी उनकी किसी तरह से भी आलोचना करता है तो उसके प्रति उनके ज्यादातर कार्यकर्ताओं के व्यवहार में जो रुचिगत और सांस्कृतिक मान प्रकट होता है व अत्यन्त निम्न स्तर का होता है। वे तर्क-विचार में जाना ही नहीं चाहते हैं। इन्सान के तौर पर किसी को मर्यादा नहीं देते हैं। कोई विरोध करे तो उसको या तो पीटा जाता है नहीं तो तरह-तरह से अपमानित किया जाता है। तब इन तथाकथित क्रान्तिकारियों के आचरण और फासिस्टों, अंध कट्टरपंथियों के आचरण के बीच फर्क कहां है जो समाज में तर्कहीन मनोभाव और अंध मानसिकता विकसित करना चाहते हैं? इसीलिए मैंने उस समय चेतावनी देते हुए कहा था कि जन साधारण के अन्दर आक्रोश भड़का कर ही क्रान्ति नहीं होती है। क्रान्ति वही जनता कर सकती है जो क्रान्तिकारी राजनैतिक आन्दोलन के अन्दर शिक्षित हो कर कुछ हद तक क्रान्ति के उपयोगी मानसिकता और संस्कृति की अधिकारी हुई है। येन केन प्रकारेण लोगों को उत्तेजित करने के जरिए ही क्रान्ति नहीं होती है, इससे क्रान्ति के नाम पर प्रतिक्रिया की जमीन तैयार होती है। भारत की सरजमीन पर बार-बार ठीक यही घटित हो रहा है। परिणामत: इस घोर घातक गलत राजनीति और क्रियाकलापों की वजह से जो तर्कहीन मानसिकता विद्यमान है उसका फायदा उठाकर आज कांग्रेसी प्रतिक्रिया जबरदस्त घर करती जा रही है। ...

पार्टी यदि क्रान्तिकारी पार्टी न हो, उसका रास्ता यदि गलत हो, उसका क्रान्ति का सिद्धान्त यदि गलत हो, तो क्रान्ति-क्रान्ति के खेल में सारी जनता की कुर्बानी, कार्यकर्ताओं का आत्मत्याग बेकार में नष्ट हो जाता है। नतीजतन जनता विभ्रांत हो जाती है और उसका लाभ उठा कर प्रतिक्रिया फिर से मजबूत हो जाती है। अत: एक गलत राजनीतिक पार्टी–नीति, आदर्श, रुचि, संस्कृति, राजनैतिक विश्लेषण–तमाम पहलुओं से इसके इतिहास की विवेचना करने से देखा जाएगा कि जिसके अन्दर पतन शुरू हो गया है जो पतनशील है आज भी बड़ी पार्टी कह कर यदि इस तरह की पार्टी को ही आप मजबूत करेंगे तो यही बड़ी पार्टी आन्दोलन को पथभ्रष्ट करेगी ही और सर्वनाश और भी ज्यादा होगा। कोई पार्टी बड़ी है या छोटी –यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न जरूर है लेकिन इससे भी बड़ा प्रश्न यह है कि पार्टी की राजनीति सही है कि नहीं, पार्टी का चरित्र ठीक है कि नहीं और पार्टी वास्तव में ही क्रान्तिकारी पार्टी है कि नहीं। ... (24 अप्रेल 1973 के भाषण से)

आपको एक बात बताना मैं जरूरी समझता हूँ कि भूखा रह कर भी, शोषण-अत्याचार से जर्जरित हो कर भी, दिन पर दिन अधभूखी और अधनंगी हालत में रहने पर भी एक राष्ट्र उठ खड़ा हो सकता है, लड़ सकता है, लड़ने की शक्ति अर्जित कर सकता है, संगठित हो सकता है, सिर ऊँचा करके खड़ा हो सकता है–यदि उस राष्ट्र का नैतिक बल अटूट रहे और जनता के सामने एक सही आदर्श कायम रहे। वियतनाम को देखिए, चीन की क्रान्ति का इतिहास पढ़िए, क्रान्तिपूर्व चीन के लोगों की आर्थिक दुर्दशा, अत्याचार, शोषण किस चरम अवस्था पर पहुँच गया था–याद करिए। लेकिन फिर भी उन सब देशों के लोग और जन शक्ति उठ खड़ी हो गई थी। उठ खड़ी हो सकी थी एक चीज को केन्द्र करके। वह है इतने अत्याचार-उत्पीड़न के बीच भी जनता का चरित्र, राष्ट्र का चरित्र, थोड़ा बहुत नैतिक बल पुरानी नीति-नैतिकता को केन्द्र करके होने पर भी समाज में बचा हुआ था और इसी ने जनता को सही क्रान्तिकारी आदर्श ग्रहण करने और उसी के अनुरूप संघर्ष के उपयोगी नया नैतिक बल हासिल करने के काबिल बना दिया था। इसीलिए वियतनाम के लोगों को बम गिरा कर ध्वस्त नहीं किया जा सका। पूरे देश को रेगिस्तान बना देने पर भी उस देश के भूखे-नंगे-अशिक्षित किसानों और जनता का सिर नीचा नहीं किया जा सका। बारह-तेरह साल के किशोर-किशोरियों से लेकर बुजुर्गों तक जी-जान से संघर्ष करने का तेज कहाँ से हासिल कर सके थे? वे क्या सभी लेनिन-स्टालिन थे? क्या वे सभी क्रान्ति के तमाम सिद्धान्त अच्छी तरह से समझ गए थे? यह तो अवास्तविक बात है। लेकिन एक चीज उनमें थी और है जिसको आधार बना कर हर तरह के शोषण के खिलाफ अदम्य साहस के साथ वे उठ खड़े हो सके थे।

भारत के शासक देश के इस नैतिक चरित्र को पूरी तरह तबाह करने के षडयंत्र में लिप्त हैं। वे बहुत ही घाघ हैं। वे जानते हैं कि सैकड़ों अत्याचार और दमन-उत्पीड़न करके भी, भूखा रख कर भी किसी राष्ट्र को, देश की जनता को सिर्फ पुलिस-मिलट्री की मदद से ज्यादा दिन तक दबा कर नहीं रखा जा सकता है। हर जमाने के स्वेच्छाचारी शासकों के अत्याचार का इतिहास यही बतलाता है कि शोषण-दमन के जरिए, पुलिस राज व मिलिट्री के बल पर आखिर तक जन-शक्ति को दबाया नहीं जा सकता है, सत्ता की रक्षा नहीं की जा सकती है। जनशक्ति सिर ऊँचा कर उठ खड़ी होती है यदि उनको सही क्रान्तिकारी आदर्श मिल जाए और उनका नैतिक बल अटूट रहे। ...

आप यह जो सांस्कृतिक पतन देख रहे हैं यह एक संयोग (एक्सीडेण्ट) नहीं है। स्वत:स्फूर्त कुछ नहीं है। ऐसा मामला नहीं है जो पूर्व निर्धारित एक अवश्यंभावी नियति हो–मानो जो होना ही था और वही हो रहा हो। गहराई से देखने पर पकड़ में आ जाएगा, हालांकि लोगों की नजरों से ओझल रह कर यह हो रहा है फिर भी इसके पीछे शासक वर्ग की एक सुनियोजित चाल और संरक्षण है। लोगों को ये 'अच्छा बनों, नेक बनो' की बातें कहते हैं फिर प्रेक्टिकल (व्यवहारिक) राजनीति की दुहाई देकर तुच्छ दलगत स्वार्थ में सिर्फ तत्कालीन प्रयोजन को सामने रख कर, सिर्फ सत्ताधारी पार्टी ही नहीं बल्कि क्रान्ति का तमगा लटकाए अनेक पार्टियाँ भी मनुष्य के अन्दर जो नीच प्रवृत्तियाँ होती हैं उनको ही बढ़ावा दे रही हैं। संघर्ष और लड़ाई के नाम पर कायर की भांति हमला करने की प्रवृत्ति को, दस लोग मिल कर एक को मारने के नीच क्रियाकलाप को, सैद्धांतिक चर्चा, तर्क-विचार की बजाय असहिष्णुता की प्रवृत्ति को संरक्षण दिया जा रहा है। लोभ-लालच और नीचता जो एक आदमी को अमानुष बना देती है, उसके शौर्य-वीरता और असल मर्यादाबोध को नष्ट कर देती है उसी को आज संरक्षण दिया जा है। पैसे के बदले काम करने वाले कार्यकर्ताओं से पार्टी या ट्रेड यूनियन का नियमित काम कराया जा रहा है और चुनाव का काम कराया जाता है। यह सब हो रहा है प्रेक्टीकल राजनीति की दुहाई देकर। लाखों लाख बेरोजगारों से आज सारा देश भर गया है, लोगों को खाने के लाले पड़े हुए हैं। इसका फायदा उठाते हुए ये राजनीतिक पार्टियाँ उन्हें इस्तेमाल कर रही हैं। इसी तरह उन्हें 'नौकरी' दी जा रही है। आप लोग जानते हैं कि सभी मनुष्य गुण-दोष लेकर ही मनुष्य हैं। मनुष्य के अन्दर जो सब अच्छे पहलू रहते हैं अर्थात् उसमें जो सब अच्छे पहलू–साहस, वीरता, सहानुभूति, उदारता और कर्त्तव्यबोध के पहलू रहते हैं उन पहलुओं को बढ़ाने में सहायता करके ही उसके दोषों को दूर किया जा सकता है। सिर्फ दोष को दूर करने की बात करने से तो दूर नहीं हो जाते हैं या मनुष्य को नेक बनो का उपदेश देने से ही तो मनुष्य नेक या अच्छा नहीं बन जाता है। फिर एक तरफ 'नेक बनो, अच्छे बनो' कहते हुए यह उपदेश और दूसरी तरफ प्रेक्टिकल राजनीति की दुहाई देते हुए कोई भी व्यक्ति या कोई पार्टी ही क्यों न हो, कथनी में उनके जो भी क्यों न हो मनुष्य के अन्दर की नीच प्रवृत्तियों को उकसा कर और इसके जरिए वे जाने में हो या अनजाने में, खुद

(शेष पृष्ठ 7 पर)

# जनता को दिखायेंगे कि सही रास्ता क्या है, किस रास्ते मुक्ति मिलेगी

## हरियाणा में हुई पार्टी कार्यकर्ताओं की बैठक में कॉमरेड कृष्ण चक्रवर्ती

**रोहतक :** 27 जुलाई को छोटूराम पार्क में एसयूसीआई (सी) के कार्यकर्ताओं की राज्य स्तरीय बैठक हुई जिसकी अध्यक्षता पार्टी के राज्य सचिव कॉ. सत्यवान ने की। इसमें राज्य के मौजूदा राजनैतिक हालात, केन्द्र की भाजपा-नीत सरकार और राज्य की कांग्रेस सरकार की जनविरोधी नीतियों के खिलाफ जनआन्दोलन की तैयारी, आगामी विधानसभा चुनाव के बारे में चर्चा हुई। कॉ. सत्यवान ने कहा कि बढ़ती महंगाई, बेरोजगारी व भ्रष्टाचार पर लगाम लगाने, लूटपाट, हत्या, महिलाओं के साथ बलात्कार जैसे जघन्य अपराधों की रोकथाम करने, प्रदेश को सूखाग्रस्त घोषित कर किसान-खेतमजदूरों को राहत पहुंचाने, सिंचाई के वैकल्पिक इंतजाम करने और मुआवजा देने की मांग को लेकर पार्टी जन अभियान चलायेगी और सभी वामपंथी, जनवादी व प्रगतिशील ताकतों को एक मंच पर लाने का प्रयास करेगी। 31 अगस्त को रोहतक में राज्य स्तरीय रैली करने का निर्णय लिया गया। अंत में पार्टी के पोलिट ब्यूरो सदस्य कॉमरेड कृष्ण चक्रवर्ती ने वक्तव्य रखा।

### कॉमरेड चक्रवर्ती का भाषण

साथियो, आज आप देश के आर्थिक, राजनैतिक, सामाजिक, खासकर नैतिक और सांस्कृतिक क्षेत्र में जो संकट देख रहे हो वह संकट क्या है? वह संकट कहाँ से आता है? दरअसल यह पूँजीवाद का ही संकट है। लेनिन ने बहुत अर्से पहले, लगभग 100 साल पहले दिखाया था कि पूँजीवाद अपने विकास की चरम अवस्था साम्राज्यवाद में पहुँच कर अब मरणासन्न हो चुका है, यह प्रतिक्रियावादी हो चुका है। जब इसे अस्तित्व से चले जाना चाहिए, यह जा नहीं रहा है। एक दिन इसे मर जाना है, पर यदि यह नहीं मरता है तो यह हजारों बीमारियों से एक पर एक ग्रस्त होता रहता है। पूँजीवाद का ऐसा ही हाल हो गया है।

प्रकृति में जो परिवर्तन होते हैं, परिमाणगत परिवर्तन होते-होते गुणगत परिवर्तन हो जाते हैं जिसे हम क्रान्तिकारी परिवर्तन कहते हैं। दरअसल समाज में भी मूल में नियम वही काम कर रहा है लेकिन प्रकृति में जिस तरह अपने आप परिवर्तन हो जाता है, परिमाणगत से गुणगत परिवर्तन हो जाता है, समाज में उस तरह नहीं होता है। समाज में इन्सान की चेतना की एक भूमिका होती है। शोषित-पीड़ित जनता जब तक चेतना के साथ, सचेत रूप से संगठित होकर क्रिया नहीं करती है तब तक समाज में क्रान्तिकारी परिवर्तन होता नहीं है। सचेत और संगठित ढंग से क्रिया करने से समाज में क्रान्ति होती है। रूस में हुई थी, चीन में हुई थी, वियतनाम में हुई थी क्योंकि लोगों ने सचेत ढंग से संघर्ष किया था ताकि शोषित जनता उठ खड़ी हो। हमारे देश में भी क्रान्ति ऐसे ही होगी। हम इसका प्रयास कर रहे हैं। जब तक ऐसी स्थिति तैयार नहीं होगी तब तक पूँजीवाद के इस संकट के कारण जनता की जिन्दगी में इस संकट का प्रतिफलन होगा ही होगा। आप अपनी जिन्दगी में संकट का जो प्रतिफलन देख रहे हो, वह पूँजीवादी व्यवस्था का ही संकट है। इससे यही दिखाई देता है कि असल में यह पूँजीवाद का ही संकट है। मूल में तो यह संकट उसी का है। पूँजीवाद की रक्षा करना अब मुश्किल हो रहा है। उसके लिए वे हजारों कदम उठाते हैं लेकिन फिर भी इसकी रक्षा नहीं कर पा रहे हैं जैसे एक समय भूमण्डलीकरण करने का कदम उठाया गया था। भूमण्डलीकरण से पहले नवउपनिवेशवाद की नीति अपनायी गई थी। ऐसी बहुत सी नीतियाँ वे ले रहे हैं। लेकिन पूँजीवाद को बचा पाना सम्भव नहीं है। यह संकट जब जबरदस्त गहन संकट हो गया तभी तो 2008 की भयंकर मंदी का संकट आया था। उसका प्रभाव अमेरिका से शुरू हुआ और इसने पूरे यूरोप व एशिया तक को अपनी चपेट में ले लिया था। तमाम पूँजीवादी देशों को इसने हिला कर रख दिया था। यह इतना बड़ा संकट था। इसका असर अभी भी गया नहीं है, चल रहा है।

इस स्थिति में मनमोहन के नेतृत्व में कांग्रेस-नीत यूपीए सरकार चल रही थी। वह पूँजीवाद की सेवा करते-करते यानी जनविरोधी नीतियाँ अपनाते-अपनाते जनता से बिल्कुल अलग-थलग हो गई थी। क्योंकि पूँजीपतियों की सेवा करने, पूँजीवाद को बचाये रखने का एक ही तरीका है, वह है जनविरोधी नीति अपनाना। इसलिए जनता उससे घृणा करने लगी थी। जब ऐसी स्थिति हो गई तब पूँजीपतियों के लिए और भी संकट बढ़ गया। उन्होंने देखा कि ऐसे में कभी भी जोरदार आन्दोलन छिड़ सकता है। भ्रष्टाचार खत्म करने के नाम पर जो आन्दोलन अन्ना हजारे ने किया उसमें ऐसी बात नहीं कि सिर्फ भ्रष्टाचार की वजह से ही इतने लोग कूद पड़े थे बल्कि हकीकत यह है कि हजारों संकटों, समस्याओं के चलते लोगों का जीना दूभर हो गया था, इसलिए लोग इसके बहाने आन्दोलन में कूद पड़े थे। 'निर्भया' का दिल्ली में जो गेंगरेप हुआ, उसके खिलाफ हजारों हजार छात्र-नौजवान, युवक-युवतियाँ आन्दोलन में सड़कों पर उतर आई थी। आन्दोलन का यह रुझान देखकर वह (पूँजीपति वर्ग) घबरा गया। वे जानते हैं कि कभी भी स्वत:स्फूर्त आन्दोलन को यदि क्रान्तिकारी दिशा मिल जाए तो वह भीषण रूप ले लेगा। उसे रोकना होगा। उसे रोक पाना यूपीए सरकार के वश की बात नहीं रही और लोकसभा चुनाव का मौका भी करीब आ गया था। वे ऐसे एक नेता की तलाश में थे जो यह काम कर सके और उन्हें ऐसी एक पार्टी भी चाहिए थी। उन्हें ऐसा नेता मिल भी गया। वह है मोदी जिसने गुजरात में मुख्यमंत्री के रूप में टाटा, अम्बानी, अडाणी, सभी की सेवा करते-करते दिखा दिया कि यह काम वह बखूबी कर सकता है। उसका दावा था कि कांग्रेस ने उनकी जितनी सेवा की, उससे कहीं ज्यादा सेवा वह उनकी कर सकता है। वे उन्हें क्यों नहीं चुन लेते। सिंगूर से नेनो कार फैक्टरी उखाड़ कर टाटा अहमदाबाद ले गये थे। इसका मतलब यह नहीं था कि यह उस आन्दोलन की कोई माँग थी कि आप यहाँ से भाग जाओ। यह आन्दोलन हमने ही शुरू किया था। बाद में उसमें तृणमूल कांग्रेस भी शामिल हुई थी। उस आन्दोलन की माँग थी कि गरीब किसानों से जो जमीन टाटा ने ली उसका पूरा मुआवजा दो जो उनको दिया नहीं। यह बात सही नहीं है कि टाटा को भगा देने के लिए हमने आन्दोलन किया था। मोदी के शासनकाल में गुजरात सरकार ने टाटा को और भी फायदा पहुँचाया। उसे काफी सारी जमीन दी, उसकी कीमत कुछ भी नहीं ली, बिजली-पानी पर सब्सिडी दी, लगभग टैक्स फ्री कर दिया जिसे टैक्स होलीडे कहा जाता है वह दिया। इससे भी बड़ी बात यह है कि मोदी सरकार ने यह आश्वासन उन्हें दिया कि वह वहाँ मजदूर आन्दोलन बर्दाश्त नहीं करेगी। यदि मजदूर आन्दोलन हुआ तो वह उसे दबायेगी। इससे खुश होकर अडाणी, अम्बानी, टाटा वगैरह जो कारपोरेट घराने हैं उन्होंने इनको ही अपना नुमाइन्दा चुन लिया। यह समझ कर कि आज संकट की घड़ी में यह पूँजीपतियों का दलाल बन सकता है, उन्होंने मोदी को चुन लिया।

पार्टी कार्यकर्ताओं की आम सभा को संबोधित करते हुए कॉ. कृष्ण चक्रवर्ती

बीजेपी वैसी पार्टी नहीं है जैसी कांग्रेस है एकदम ढीली-ढाली। उसके पीछे संघ परिवार, खासकर आरएसएस जैसा एक फासिस्ट संगठन है। सर्वहारा की क्रान्तिकारी पार्टी, एक कम्युनिस्ट पार्टी, जैसे कि हमारी पार्टी है, एक ही दर्शन, एक ही विचारधारा को आधार करके, एक ही दृष्टिकोण लेकर संगठित होती है। कम्युनिस्ट पार्टी में, जनवादी केन्द्रीयता काम करती है अर्थात कम्युनिस्ट पार्टी ज्ञान-विज्ञान को आधार करके पार्टी के तमाम सदस्यों का चेतना का मान उन्नत करते हुए इतना ऊंचा उठा देती है कि कॉमरेड नेता से हर विषय पर विस्तार से चर्चा कर सकते हैं, मतभेद हो तो उसे बता सकते हैं, रख सकते हैं लेकिन वे नेतृत्व को मानते हुए, मार्क्सवाद यानी द्वंद्वात्मक भौतिकवाद की विचारधारा के आधार पर एक ही सोच पर पहुँचने के लिए विचार करते हैं। आरएसएस में ऐसा नहीं है। आरएसएस का भी एक ही दर्शन है, वह है हिन्दुत्व, हिन्दू धर्म, वेद-वेदांत। वहाँ पूरा ब्लाइण्ड बिलीफ यानी एकदम अंधविश्वास है, जैसे धर्म में विश्वास होता है। आप युक्ति-तर्क से भगवान को नहीं मान सकते हो। भगवान मानने का मायने ही है अंधेपन से आप मानते हो। इसलिए आरएसएस के चिंतन का भी आधार ऐसा अंधापन, ऐसा कट्टरपन है। हिन्दू धर्म, भारतीय परम्परा आदि जितना सड़ा-गला पुराना चिंतन है उसी को नये ढंग से लाने का उनका प्रयास है और उसको आधार करके लोगों की कट्टरपंथी मानसिकता, फेनेटिक माइण्ड बनाना है। दरअसल सही-सही विचार किया जाये तो हिन्दू धर्म साम्प्रदायिकता को नहीं मानता। शंकराचार्य के बाद विवेकानन्द से बड़ा हिन्दू हमारे देश में और कौन हुआ है? विवेकानन्द साम्प्रदायिक नहीं थे। मुसलमान, ईसाई, बौद्ध, जैन या सिख के खिलाफ विवेकानन्द कभी नहीं बोले। विवेकानंद ने कभी ऐसा नहीं किया। किसी धर्म में नहीं है कि दूसरे धर्मावलंबियों को मारो-पीटो, कत्ल कर दो। साम्प्रदायिकता से धर्म का कोई संबंध नहीं है। यह बात हम सब कॉमरेडों को गहराई से समझनी होगी और जनता को भी समझाना होगा कि हम धर्म के विरोधी बिल्कुल नहीं हैं। आरएसएस धर्म मानता है इसलिए हम उसके विरोधी हैं ऐसी बात बिल्कुल नहीं है। जो सही मायने में धर्म को मानता है वह कभी दूसरे धर्म के लोगों को मार नहीं सकता। उनका खून नहीं कर सकता। तब यह साम्प्रदायिकता क्या होती है? साम्प्रदायिकता है अपने समुदाय जेसे हिन्दू समुदाय है, के प्रति अंधा प्रेम, अंधा स्नेह और विरोधी धर्म के समुदाय के लोगों जैसे जो मुस्लिम, सिख, इसाई हैं उनके प्रति अंधी नफरत। इसके साथ धर्म का कोई संबंध नहीं है। लेकिन यह उनके खून में है। मुसलमान का नाम सुनते ही वे चिढ़ते हैं। यह है उनकी संस्कृति! इसलिए जिन्हें हम मानवीय मूल्य कहते हैं मानव से प्रेम, स्नेह, दया, करुणा, सहानुभूति, उनमें कुछ नहीं है। गुजरात में उन्होंने जो कुछ किया वह क्या था? बच्चे को ही नहीं बल्कि जिस बच्चे ने जन्म भी नहीं लिया है, गर्भवती महिला का पेट चीर कर बच्चा निकाल कर, त्रिशूल पर टांग कर आग में जिन्दा जलाया। उसे देख कर नाचे, खुश हुए। यह है उनकी संस्कृति! उनमें मानवीय मूल्य, मानवीय गुण या क्वालिटी नाम की कोई चीज नहीं है। यह है फासिस्ट चरित्र। इसे साम्प्रदायिकता हम कहते हैं लेकिन फासीवादी चरित्र इसी प्रकार का होता है। जैसे जर्मनी में, इटली में यहुदियों को एन्होंने इसी तरह मारा, पीट-पीट कर मार डाला, गैस चैमबरों में जरा सी गैस सूंघा कर मौत के घाट उतार दिया क्योंकि ज्यादा गैस देने में खर्चा ज्यादा हो जाता। लोग, बच्चे, महिलाएं खून की उल्टियां करते-करते तड़प-तड़प कर मर गये और इसे देख कर वे बड़े खुश हुए, मजा लिया। यह सब संस्कृति फासीवादी संस्कृति है।

यह जो बीजेपी पार्टी है यह एक संगठित पार्टी है, केन्द्रीकृत पार्टी है लेकिन धर्मान्ध कट्टरपंथी है, 'फेनेटिक' है। कम्युनिस्ट पार्टी की एकदम विरोधी है। इसका मुकाबला एक कम्युनिस्ट पार्टी ही कर सकती है। चिन्तन, नीति-नैतिकता, महानता के क्षेत्र में, ज्ञान जगत में, हर क्षेत्र में तुलना में कम्युनिस्ट के सामने यह कुछ भी नहीं है। इसलिए इनके प्रति इसका सबसे ज्यादा आक्रोश है। कम्युनिस्ट के नाम से वे मुसलमान से भी ज्यादा चिढ़ते हैं। किसलिए? यहूदियों के खिलाफ फासिस्टों ने जो लड़ाई शुरू की थी, वह आखिर में कम्युनिस्टों के ही खिलाफ गई, जाएगी ही। क्योंकि कम्युनिस्ट ही आज सबसे

(शेष पृष्ठ 4 पर)

# कॉमरेड कृष्ण चक्रवर्ती का भाषण

(पृष्ठ 3 का शेष)

महान चरित्र के अधिकारी हैं। शोषित जनता के प्रति जो प्यार है, स्नेह है, उसका चरम विकास कम्युनिस्ट में ही हुआ है। यह एक स्थिति है।

आपको यह समझ लेना चाहिए कि पूँजीपति वर्ग ने संकट की घड़ी में नरेन्द्र मोदी को चुना जो आरएसएस के नेता हैं, बीजेपी के नेता हैं। तमाम बड़े-बड़े पूँजीपति घराने टाटा, अम्बानी, अडाणी, सब ने यह तय किया था। हमारे पोलिट ब्यूरो ने लोकसभा चुनाव के बाद सभी राज्यों से पूरी खबर लेकर विचार करके जो बयान जारी किया था, उसमें आपने देखा होगा हमने दिखाया था कि मोदी की लहर, मोदी की हवा दिखाने की उन्होंने जो कोशिश की थी, वैसी कोई लहर-वहर नहीं थी। जैसे उदाहरण के लिए, भारी संख्या में सीटों के अंतर से तमिलनाडू में एआईएडीएमके जीती, उड़ीसा में नवीन पटनायक की बीजेडी जीती, बंगाल में तृणमूल कांग्रेस जीती, आंध्र प्रदेश में टीडीपी(तेलगु देशम पार्टी) जीती, तेलंगाना में तेलंगाना राष्ट्रीय समिति (टीआरएस) जीती लेकिन इन राज्यों में बीजेपी नहीं जीती। केरल में बीजेपी को एक भी सीट नहीं मिली। कर्नाटक में वह सत्ता में थी, वहां कुछ सीट मिली। दिल्ली में भी बीजेपी नहीं जीतती यदि केजरीवाल इस्तीफा नहीं देते। उन्होंने तो कितनी बड़ी गलती की है यह बताना मुश्किल है। वे यदि सत्ता में होते तो दिल्ली की शायद सारी सीट आप पार्टी जीत ले जाती। हरियाणा में भी बीजेपी को इतनी सीट मिलने की कोई वजह नहीं थी। असल में जनादेश चौटाला की पार्टी इनेलो को ही मिलना था। लेकिन उन्होंने जब खुद ही कह दिया कि वे मोदी को लायेंगे तो लोगों ने सोचा तुम क्या लाओगे फिर तो हम ही न ले आयेंगे। बाद में चौटाला ने माना कि उनसे बहुत बड़ी गलती हो गई। तब बीजेपी जीती कहाँ? यह छत्तीसगढ़, म.प्र., राजस्थान, गुजरात में जीती जहाँ उनका शासन था ही। कांग्रेस के सिवा वहां और कोई पार्टी थी ही नहीं। हमने दिखाया कि हकीकत में मोदी के पक्ष में कोई लहर या हवा थी ऐसी बात नहीं है। बात यह थी कि कांग्रेस-विरोधी लहर, कांग्रेस-विरोधी एक जबरदस्त हवा देश में थी। कांग्रेस के खिलाफ जो भी डट कर खड़ा रहा वही जीत गया। जैसे तमिलनाडु में जयललिता की एआईएडीएमके, बंगाल में ममता बैनर्जी की तृणमूल कांग्रेस, उड़ीसा में तीन बार मुख्यमंत्री रहे नवीन पटनायक की बीजेडी, आंध्र प्रदेश में चन्द्रबाबू नायडू की टीडीपी और तेलंगाना में चंद्रशेखर राव की टीआरएस, ये सब भारी संख्या में सीटें लेकर जीती। वहां पर बीजेपी कुछ नहीं कर पाई। ऐसा क्यों हुआ? जैसे बीजेपी एण्टी कांग्रेस सेंटीमेंट का फायदा लेकर जीत गई, वैसे ही ये पार्टियां भी एण्टी-कांग्रेस सेंटीमंट का फायदा उठा कर जीत गई।

लेकिन जो भी हो, चाहे केन्द्र में बीजेपी हो या उड़ीसा, बंगाल, तमिलनाडू आदि विभिन्न राज्यों में जो सत्ता में आयी हैं, सभी भयंकर प्रतिक्रियावादी ताकतें हैं। वैसे ही जैसे चन्द्रशेखर की सरकार गिरने के बाद कांग्रेस आई थी, फिर बीजेपी आई थी। चाहे बीजेडी हो, तुणमूल कांग्रेस हो, एआईएडीएमके हो, टीडीपी या टीआरएस हो, ये सब भयंकर प्रतिक्रियाशील ताकतें हैं। देश-प्रदेश में जो स्थिति है वह क्या है? देश भर में घोर प्रतिक्रियावादी ताकतें सत्ता में हैं, केन्द्र में भी और राज्यों में भी। आपको यह समझ लेना चाहिए। एक भयंकर प्रतिक्रियावादी परिवेश है। जो वामपंथी पार्टियाँ हैं, खासकर राष्ट्रीय स्तर पर सीपीआई-सीपीएम, उनका तो लगभग सफाया ही हो गया। बहुत लोगों को यह बात शायद मालूम नहीं कि संयुक्त सीपीआई एक जमाने में बहुत बड़ी पार्टी थी। 1952 के हुए पहले आम चुनाव में कांग्रेस सत्ता में आई थी, नेहरू की सरकार में सीपीआई विपक्ष की नेता थी। वह आज इतनी छोटी हो गई है कि उसे इस बार एक एमपी सीट मिली है। उसकी राष्ट्रीय मान्यता चली गई है। सीपीएम बंगाल, केरल और त्रिपुरा में इतने दिनों तक सत्ता में रही, फिर भी उसे इन तीन राज्यों में सिर्फ 9 एमपी सीट मिली हैं। वामपंथी रहे कहाँ? यह जो स्थिति हो गई है इसे आपको समझना चाहिए। आज विस्तार से चर्चा में जाने का समय नहीं है।

फासीवादी परिवेश में, जिसमें अंधापन, कट्टरपन की भावनाएं हैं, आरएसएस का प्रभाव बढ़ गया है। वहीं मोदी और बीजेपी कितने घोर साम्प्रदायिक हैं यह गुजरात में जो हुआ उससे साफ जाहिर है, वह सब दोबारा बताने की जरूरत नहीं है। आप सब जानते हैं। लेकिन अब क्या वे देश में वही सब करेंगे? नहीं करेंगे। वे दिखायेंगे कि देखो हमारे शासन में तो दंगे नहीं हुए। अरे, दंगे तुम्हीं कराते हो, वहाँ दंगा हुआ, वह तो तुमने ही कराया था और किसी ने नहीं। दंगे जो होते हैं वे आप ही कराते हैं और जब नहीं होते हैं तो इसलिए कि आपने ही करवाये नहीं। यदि करवाओगे तो होंगे। सीधी सी बात है। दंगे आपके सिवा और कौन करवाता है? दंगे पूँजीपतियों के लिए फायदेमंद नहीं होते। दंगे के दौरान उत्पादन को, बिजनेस को नुकसान झेलना पड़ता है। कभी-कभी जनता में फूट डालने के लिए, उनकी एकता को तोड़ने के लिए, उनके आन्दोलन को छिन्न-भिन्न करने के लिए उन्हें दंगे कराने पड़ते हैं। नहीं तो पूँजीपतियों के लिए ये कोई फायदेमंद चीज हों ऐसी बात नहीं है। इसलिए दंगे करवायेंगे नहीं। इनकी उन्हें अब जरूरत ही क्या है? संसद में जितनी संख्या में सीटें लेकर वे आये हैं, उनका पूर्ण बहुमत है। बहुत दिनों से किसी एक अकेली पार्टी का इतना भारी बहुमत नहीं था चाहे एनडीए रही हो या यूपीए, बीजेपी हो या कांग्रेस। इस बार इतना भारी बहुमत आया है।

इस स्थिति में हमें हमारी पार्टी की स्थिति को समझना होगा। यदि एक हिसाब से देखें तो यह जो स्थिति है, एक घोर प्रतिक्रियावादी परिवेश है, हालात भयंकर प्रतिकूल हैं लेकिन यही सब कुछ नहीं है। मार्क्स ने दिखाया था कि दुनिया में एब्सोल्यूट (परम) नाम की कोई चीज नहीं होती है। जहाँ अंधेरा होता है वहाँ रोशनी भी होती है। परम अंधेरा ही है बाकी कुछ है ही नहीं ऐसा नहीं होता है। जहाँ नेगेटिव है, वहाँ पोजीटिव भी होता है। हाँ जब नेगेटिव हावी होता है, प्रधान होता है तब हम कहते हैं अंधेरा है और जब पोजीटिव हावी होता है, डोमीनेंट होता है तब हम कहते हैं कि उजाला है, रोशनी है लेकिन उसमें भी अंधेरा रहता है, छाया रहती है। पिछले आम चुनाव में बीजेपी के सत्ता में आने के बाद यह जो भयंकर परिस्थिति तैयार हुई है, इसमें सकारात्मक बात क्या है? हाँ, है इसमें भी सकारात्मक बात। आप जानते हैं कि लोगों का जीना दूभर हो रहा है। किसी समस्या का समाधान तो हुआ ही नहीं। ऊपर से रेल किराया 14.2 प्रतिशत और माल भाड़ा 6.5 प्रतिशत बढ़ा दिया है। चीजों के भाव बेतहाशा बढ़ेंगे। डीजल, पेट्रोल, रसोई गैस आदि सब के दाम बढ़ेंगे। कल के इण्डियन एक्सप्रेस अखबार में खबर थी कि शिक्षा का पाठ्यक्रम पूरा का पूरा बदलने की कोशश की जा रही है। वह तो हम जानते ही थे। यह जो महिलाओं के साथ बलात्कार, अपराध हो रहे हैं, हमले हो रहे हैं, छोटी-छोटी बच्चियों के खिलाफ जघन्य अपराध हो रहे हैं। समाज में अपराध बढ़ रहे हैं। वे यह कह कर कि मूल्यबोध खत्म हो रहे हैं, मूल्यबोध चाहिएं, मूल्यबोध लाने के नाम पर हजारों साल पुराने मूल्यबोध लायेंगे जो आज किसी काम के नहीं हैं। फासीवाद तो यही करता है। फासीवाद प्रगतिशील चिन्तन को नहीं लाता। साइन्स को नहीं लाता बल्कि इससे तो वह डरता है। कॉमरेड शिवदास घोष ने दिखाया था कि अध्यात्मवाद और विज्ञान के तकनीकी पहलू का मिश्रण करते हुए जो एक फासीवादी संस्कृति तैयार होती है जिससे चिंतन का रेजीमेंटेशन आता है, वह लाने का प्रयास उनके द्वारा जारी है। लेकिन इससे डरने की कोई बात नहीं है। आर्थिक, राजनैतिक, सामाजिक, नैतिक, सांस्कृतिक क्षेत्र में, जीवन के हर क्षेत्र में भयंकर संकट है। जनता इससे बचने का रास्ता खोज रही है। वह रास्ता दिखाने वाला देश में और काई नहीं है, सिर्फ हम ही हैं। असल कम्युनिस्ट पार्टी, अर्थात एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) ही रास्ता दिखा सकती है इसके सिवा और कोई नहीं। कॉमरेड शिवदास घोष का चिन्तन ही रास्ता दिखा सकता है। इसमें कोई संदेह नहीं जहाँ-जहाँ जनता में कॉमरेड शिवदास घोष का चिन्तन गया है, जनता साथ जुटी है। जनता समझती है कि यह तो उनकी अपनी बात है। हमारी बात कोई नकारता नहीं है। उनके मन में दुख है जिससे वे कहते हैं कि आपकी पार्टी बहुत छोटी है, आप जीत नहीं पाओगे। यह उनके मन में संदेह है, यह दुख से है। लेकिन वे तो चाहते हैं कि एसयूसीआई(सी) को सामने उभर कर आना चाहिए। एसयूसीआई (सी) ही एकमात्र पार्टी है जो रास्ता दिखा सकती है और जो जिन्दगी को महान बनाने का एक हथियार लेकर संचालित है। उनके पास उन्नत चिन्तन है वह है कॉमरेड शिवदास घोष का चिन्तन। वही जिन्दगी को महान बना सकता है। इन सब समस्याओं को हल कर सकता है। जनता में यह विश्वास है। जहाँ भी हम गये हमे जनता का प्यार मिला। बात यह है कि हम बहुत दूर तक जा नहीं पाये हैं। भारत जैसे एक विशाल देश में जहाँ विशालसंख्यक जनता है, उस जनता में हम कितनी दूर तक जा सके यह है समस्या। लेकिन जहाँ भी गये वहाँ जनता हमें अपना आदमी समझ कर अपना लेती है, परिवार का आदमी मानती है, कहीं भी जाओ किसी के भी घर में जाओ वहाँ वे खाना खिलायेंगे, अपना आदमी मानेंगे। यह कॉमरेडों का तजुर्बा है। वास्तव में ही ऐसा है। लोग हमें चाहते हैं।

अब जो विषय आया उस पर कम समय के कारण मैं संक्षेप में ही बात रखूंगा। आम जनता में, खासकर किसानों में जबरदस्त गुस्सा है। मोदी सरकार ने किसानों को कुछ भी नहीं दिया जबकि किसान की समस्या सबसे ज्यादा गंभीर है। उनकी दुर्दशा हो रही है। ऐसे ही मजदूरों का हाल है। कुछ दिन पहले राजस्थान की बीजेपी सरकार कानून में एक संशोधन लाई कि 300 मजदूरों तक को नौकरी से निकालने के लिए मालिकों को इजाजत लेने की जरूरत नहीं है। मालिक ऐसा कर सकते हैं। यह सबसे ज्यादा मजदूर-विरोधी सरकार है। यह बड़े-बड़े व्यापारियों, पूँजीपतियों की सरकार है। कांग्रेस भी ऐसी ही थी लेकिन इतने खुले तौर पर नंगे रूप में ऐसा नहीं करती थी। बीजेपी तो सीधे-सीधे टाटा, अम्बानी, अडाणी की ताबेदार है। उनकी तो उसे सेवा करनी ही पड़ेगी क्योंकि उन्होंने उसे जिताने के लिए चुनाव में मोदी के प्रचार के लिए लाखों करोड़ रुपये खर्च किये हैं। वे क्या ऐसे ही उन्हें छोड़ देंगे? वे तो पाई-पाई वसूल करेंगे। उसके लिए जो भी करने का है वह मोदी को करना पड़ेगा। वह ऐसा करेगा तो उसका बोझ जनता पर पड़ेगा। इससे जनता उसके प्रति गुस्से में होगी। कांग्रेस के प्रति उसका जितना गुस्सा था यह उससे कम नहीं होगा। एक दिन वह बीजेपी पर भी भयंकर गुस्सा हो जायेगी। इस जनता को नेतृत्व कौन देगा? जनता को नेतृत्व हमें देना होगा। क्या हम दे पायेंगे? यह सवाल हमारे सामने है। यह चुनौती हमें स्वीकार करनी पड़ेगी। हमें जनता को भरोसा देना होगा कि हाँ, हम नेतृत्व देंगे। उसके लिए हमें क्या करना होगा? हमें जनता के बीच जाना चाहिए, जनता के बीच रहना चाहिए। घर में रह कर, दफ्तर में बैठ कर दर्शन की बात करने से काम नहीं चलेगा। वह भी ठीक है करो लेकिन वह बात जनता में ले जाओ, घर-घर में ले जाओ। नौजवानों को अपने साथ लाना है ताकि उनको यह बीजेपी, आरएसएस प्रदूषित न कर पाये। हमें उनको अपनी तरफ खींच लाना चाहिए। तभी हरियाणा बदलेगा। हरियाणा को हमें बदलना है। कैसे बदलेंगे? हरियाणा के नौजवानों को, लड़के-लड़कियों को, महिलाओं को, सभी को हमें समझाना है। महिलाओं को हमें समझाना है कि जो हिन्दूवादी होता है वह पुराना सामंती चिन्तन लेकर चलता है जिसमें महिलाओं को कोई आजादी नहीं थी। उनकी आजादी, मुक्ति का सबसे बड़ा दुश्मन यह आरएसएस, बीजेपी है। महिलाओं को इसके खिलाफ आन्दोलन में आगे आना होगा। नौजवानों को हमें समझाना है कि क्या उन्हें बीजेपी नौकरी देगी और किसी को नौकरी है तो क्या बचेगी? बिल्कुल नहीं। कॉमरेड लेनिन ने बहुत दिनों पहले दिखाया था कि पूँजीवाद जब प्रतिक्रियाशील हो चुका है, वह नया औद्योगिकीकरण नहीं कर सकता है। कॉमरेड स्टालिन ने दूसरे विश्वयुद्ध के बाद दिखाया था कि पूँजीवादी बाजार का जितना कुछ स्थायित्व सापेक्ष रूप में था, वह अब खत्म हो चुका है। कॉमरेड घोष ने दिखाया था कि पूँजीवाद का संकट सुबह-शाम का संकट हो चुका है। एक कारखाना लगाओ, दस बंद हो जाएंगे। यह है स्थिति। इनका बाजार कहाँ है? बाजार का मतलब है ग्राहक की जेब में पैसा, खरीदने की शक्ति। लोगों के पास पैसा कहाँ है? मारुति मानेसर में से 500 मजदूरों को ऐसे ही निकाल दिया। इससे पहले गुड़गाँव में मारुति से बहुत सारे मजदूरों को निकाला गया था। जब यह मजदूरों को साफ नजर आ रहा है तो क्या बीजेपी सरकार लोगों को नौकरी देगी? उल्टे नौकरी करने वाले बहुत से लोगों की नौकरी चली जाएगी और जो बेरोजगार हैं उनको नौकरी नहीं मिलेगी। कुछ लोगों को नौकरी मिलेगी, नहीं तो प्रशासन और कल-कारखाना चलेगा कैसे? जो रिटायर होते जाएंगे, उनकी जगह कुछ को तो लेना ही पड़ेगा कारखाना और प्रशासन चलाने के लिए। उतना तो रोजगार मिलेगा ही। लेकिन सभी मजदूरों को, खासकर बेरोजगार नौजवानों को क्या वे नौकरी दे सकते हैं? नहीं। बल्कि बेरोजगारी बढ़ती जाएगी। शिक्षा संकुचित होती जाएगी। शिक्षा बेहद महंगी होती जाएगी। शिक्षा-स्वास्थ्य का जो व्यापारीकरण बढ़ता जा रहा है, यह और भी ज्यादा बढ़ेगा। अत: छात्र-नौजवानों, किसान-मजदूरों और महिलाओं को आन्दोलन में लाना होगा। सीपीआई-सीपीएम कुछ नहीं कर रही है। चुनाव के बाद तो ये एकदम हतोत्साहित हो गई हैं। रेलमंत्री ने इतना बड़ा फैसला लिया, रेलकिराया-मालभाड़ा बेतहाशा बढ़ा दिया फिर भी सीपीआई-सीपीएम ने कुछ भी नहीं किया। इस मुद्दे पर विशाल आन्दोलन हो सकता था। लेकिन वे करेंगे नहीं। न करने से एक हिसाब से हमारा फायदा ही है। हम यदि करें तो लोग कहेंगे यही है असल कम्युनिस्ट पार्टी, यही हैं असल वामपंथी, वे तो सिर्फ नाम के कम्युनिस्ट हैं, नाम के वामपंथी हैं।

इस स्थिति में आज जब विधानसभा चुनाव आ गया है तो इस चुनाव के बारे में फैसला तो राज्य कमेटी लेगी। सभी कॉमरेडों ने अपने-अपने सुझाव दिये हैं। उन पर राज्य कमेटी विचार करेगी। लेकिन कुछ भी हो, हमें एक पोलिसी जरूर लेनी है। उस पर हमने चर्चा की है। वह है जहाँ से भी चुनाव लड़ना सम्भव हो, हम लड़ेंगे। सभी कॉमरेडों को जीजान से लड़ना होगा। यदि कोई सोचे कि कुछ प्रचार करने, राजनैतिक चर्चा-विचार जनता में रखने के लिए हम चुनाव लड़ रहे हैं, हम जीतने के लिए नहीं लड़ रहे हैं तो यह गलत सोच है। हम जीतने के लिए लड़ेंगे। जीत पायेंगे या नहीं यह वस्तुगत स्थिति में साबित हो जाएगा। लेकिन हम लड़ेंगे। कॉमरेड घोष कहते थे हम शेर की तरह, बाज की

(शेष पृष्ठ 7 पर)

## यौन हमलों के खिलाफ प्रतिवाद

**बैंगलोर (कर्नाटक) :** 'गन्दी फिल्मों और साहित्य का नाश हो', 'अपराधियों को सख्त सजा दो', 'पोर्न वेबसाइटों पर रोक लगाओ', 'छात्र-नौजवानों का संघर्ष जिन्दाबाद' आदि के नारे एआईडीएसओ, एआईएमएसएस और एआईडीवाईओ के तत्वावधान में एकत्र हुए प्रदर्शनकारियों द्वारा लगाए जा रहे थे जो 17 जुलाई को बैंगलोर में मैसूर बैंक सर्कल पर हालिया यौन हमलों के खिलाफ प्रदर्शन कर रहे थे।

प्रदर्शनकारियों को सम्बोधित करते हुए वयोवृद्ध स्वतन्त्रता सैनानी एसएस डोरेस्वामी ने कहा कि इस तरह के अपराधों में लिप्त अपराधियों की सार्वजनिक निन्दा होनी चाहिए। महिलाओं के मुद्दों के प्रति पुलिस को और अधिक संवेदनशील होना चाहिए। महिलाओं पर हो रहे अपराधों को रोकने की जिम्मेदारी सरकार को लेनी चाहिए। उन्होंने लोगों से आह्वान किया कि जब ऐसी घटनाएं घटें तो न्याय के लिए आन्दोलन विकसित करने की खातिर उन्हें आगे आना चाहिए।

पत्रकारिता की छात्रा पर यौन हमले के खिलाफ बोलते हुए आईएमएसएस की राज्य अध्यक्षा श्रीमती जाहिदा सरीन ने कहा कि मीडिया में अश्लील सामग्री की सहज उपलब्धता की वजह से युवाओं की नैतिकता और मूल्यबोध का ताना-बाना तबाह हो रहा है। यह युवाओं को गलत रास्ते पर धकेल रहा है। मुम्बई की एक पत्रकार पर हमला करने वाले बलात्कारी ने बताया था कि अश्लील विडियो ने उन्हें अपराध करने के लिए उत्तेजित किया था। उन्होंने यह भी कहा कि जब तक अश्लीलता के प्रचार-प्रसार पर रोक नहीं लगेगी तब तक ऐसे जघन्य अपराधों को रोकना नामुमकिन है।

एआईडीएसओ के राज्य अध्यक्ष कॉ. वीएन राजशेखर ने कहा कि कांग्रेस या भारतीय संस्कृति के तथाकथित स्वयंभू रक्षकों, बीजेपी के बीच कोई फर्क नहीं है। सभी महिलाओं के लिए घड़ियाली आंसू बहाते हैं। विधायक खुद असेम्बली में अश्लील सिनेमा देखने में मशगूल पाए जाते हैं। अधिकतर राजनेताओं की आपराधिक पृष्ठभूमि है, इस गंभीर स्थिति में लोगों के पास जोरदार प्रतिरोध विकसित करने का ही रास्ता बचा है।

एआईएमएसएस की राज्य सचिव श्रीमती शोभा ने सरकार से मांग की कि जस्टिस वर्मा कमीशन की सिफारिशों को पूरी तरह लागू किया जाए जो महिलाओं पर अपराधों में काफी कमी ला सकती है।

एआईडीवाईओ के राज्य अध्यक्ष कॉमरेड विजय ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की।

## छात्र संगठन ने की उत्कल विवि कैम्पस में जनतांत्रिक माहौल बहाल करने की मांग

**भुवनेश्वर :** उत्कल विश्वविद्यालय(वनविहार) कैम्पस में 14 जुलाई को जब हमारे साथी संगठन का मुखपत्र, छात्र चेतना बेच रहे थे तब कांग्रेसी(एनएसयूआई) गुण्डों ने ऑल इण्डिया डीएसओ स्वयंसेवकों पर हमला कर दिया। इसके विरोध में ऑल इण्डिया डीएसओ ने 15 जुलाई को भुवनेश्वर में डिप्टी कमिश्नर ऑफ पुलिस के कार्यालय पर विरोध प्रदर्शन किया। संगठन ने दोषियों को तुरंत गिफ्तार करने और उत्कल विवि(वनविहार) कैम्पस में जनतांत्रिक माहौल बहाल करने की मांग की।।

# भोपाल में हुआ जिला स्तरीय छात्र सम्मेलन

शिक्षा के निजीकरण-व्यापारीकरण, फीस वृद्धि, महिलाओं व छात्राओं पर हो रहे अत्याचार के खिलाफ 27 जुलाई को छात्र संगठन ऑल इण्डिया डीएसओ द्वारा न्यू सुभाष नगर कम्युनिटी हाल में प्रथम जिला छात्र सम्मेलन आयोजित किया गया। सम्मेलन की अध्यक्षता मुदित भटनागर ने की। कार्यक्रम में संगठन के महासचिव कॉमरेड अशोक मिश्रा मुख्य वक्ता थे। उन्होंने कहा कि शिक्षा कोई भिक्षा नहीं है बल्कि हमारा अधिकार है। यह हमें दान में नहीं दी गई है। इसके लिए हमें लड़ना होगा। राज्य सरकार द्वारा हाल ही में विभिन्न सरकारी महाविद्यालयों में फिलॉसफी आर्ट एवं समाजशास्त्र आदि विषय हटाये गये हैं यह एक साजिश के तहत उठाया गया कदम है जिसका डट कर विरोध किया जाना चाहिए।

सम्मेलन में नई जिला कार्यकारिणी का गठन किया गया जिसके अध्यक्ष मुदित भटनागर, उपाध्यक्ष पारुल शर्मा एवं राजिद अहमद, सचिव विनोद लोगरिया, कोषध्यक्ष आशा प्रजापति को बनाया गया। साथ ही 8 सदस्यीय कार्यकारिणी व 11 सदस्यीय काउंसिल भी बनायी गई।

इस अवसर पर ''परीक्षा सुधार पर विचार'' नाटक का मंचन भी किया गया। सम्मेलन में भोपाल के विभिन्न स्कूल-कॉलेजों के छात्र बड़ी संख्या में शामिल हुए।

**सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए कॉमरेड अशोक मिश्रा**

## हरियाणा को सूखाग्रस्त घोषित करने व अन्य मांगों को लेकर सड़कों पर उतरे किसान

**भिवानी :** छह सूत्री मांगों को लेकर 1 अगस्त को ऑल इण्डिया कृषक-खेतमजदूर संगठन के बैनर तले किसान-खेतमजदूरों ने नेहरू पार्क से निकल कर शहर में प्रदर्शन करते हुए किसान लघुसचिवालय पहुंचे। वहां धरना दिया और उपायुक्त को मांगों का ज्ञापन सौंपा।

धरने को सम्बोधित करते हुए संगठन के जिला प्रधान कॉ. जिले सिंह ने कहा कि महंगाई बढ़ रही है। किसानों की हालत खराब हो चुकी है। मजदूरों को सारा साल काम नहीं मिलता है। डीजल, डीएपी, कीटनाशकों व खेती के औजारों की कीमत आये दिन बढ़ रही है। किसानों को सरकार न तो लाभकारी मूल्य देती है और न ही मौजूदा समर्थन मूल्य पर अनाज खरीदती है। इस वजह से कर्ज के बोझ तले दब कर किसान आत्महत्या करने को मजबूर हो रहे हैं। आवारा पशुओ द्वारा फसल उजाड़ा जाना भी समस्या है। कम बारिश की वजह से प्रदेश सूखे की चपेट में है। उन्होंने हुड्डा सरकार से प्रदेश को सूखाग्रस्त घोषित करने, सिंचाई की वैकल्पिक व्यवस्था करने और मुआवजा देने, कृषि भूमि के अधिग्रहण पर रोक लगाने, गरीब किसानों के कर्ज और बिजली बिल माफ करने, मजदूरों को सारा साल काम देने और लाभकारी मूल्य पर फसलों की सरकारी खरीद करने की मांग की।

किसान संगठन के प्रदेश सचिव कॉ. विजय कुमार ने कहा कि केन्द्र में सत्तासीन मोदी सरकार ने किसानों को कुछ राहत नहीं दी है। किसानों को फसल की बिक्री पर बोनस देने पर पाबंदी लगा रही है। यह भी स्मार्ट सिटी, औद्योगिक गलियारे व एसईजैड बनाने के नाम पर बड़े पैमाने पर किसानों की जमीनों को आसानी से हड़पने के लिए देशी-विदेशी कम्पनियों के स्वार्थ में मौजूदा भूमि अधिग्रहण बिल को संशोधित करने जा रही है। कांग्रेस और बीजेपी की नीतियों में कोई फर्क नहीं है। उन्होंने किसान-मजदूरों का आह्वान किया कि वे अपनी जायज मांगों के लिए आन्दोलन में शामिल हों।

धरने में संगठन के जिला सचिव कॉ. रोहताश सैनी, उम्मेद सिंह नंबरदार, सुखबीर, जयदीप, सुनील, मनीराम, मास्टर राजकुमार, फूलसिंह, मनोहरलाल, राजकुमार, धर्मवीर सिंह भी शामिल थे।

**कैथल :** 1 अगस्त को ऑल इण्डिया कृषक-खेतमजदूर संगठन कैथल जिला कमेटी ने केन्द्र की भाजपा सरकार और राज्य की कांग्रेस सरकार की किसान-मजदूर विरोधी नीतियों के खिलाफ शहर में प्रदर्शन कर डी.सी. की मार्फत मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन भेजा। प्रदर्शन का नेतृत्व संगठन के जिला अध्यक्ष कॉ. बाबूराम ने किया। प्रतिनिधिमण्डल में संगठन के जिला कमेटी सदस्य कॉ. राजकुमार, कृष्ण लाल, दर्शन सिंह व जीता राम शामिल थे।

## अश्लीलता रोकने के लिए चलाया हस्ताक्षर अभियान

**ग्वालियर (म.प्र.) :** अश्लील फिल्मों-पोस्टरों, शराबखोरी व नशाखोरी के खिलाफ 21 जुलाई को ग्वालियर में ऑल इण्डिया महिला सांस्कृतिक संगठन द्वारा हस्ताार अभियान चलाया गया। संगठन ने अश्लील फिल्मों व पोस्टरों पर रोक लगाने की मांग की। प्रशासन की ओर से कारगर कदम न उठाये जाने पर अश्लील पोस्टरों पर कालिख पोतने की भी जनता से अपील की।

## ऑल इण्डिया डीएसओ की ओर से विशाल रैली और विरोध प्रदर्शन

**हैदराबाद :** अखिल भारतीय प्रतिवाद दिवस पर 18 जुलाई को ऑल इण्डिया डीएसओ की ओर से विशाल रैली और विरोध प्रदर्शन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता संगठन के जिला कमेटी सचिव कॉ. माल्लेश राज ने की। संगठन के राज्य उपाध्यक्ष भी कार्यक्रम में शामिल हुए और रैली को सम्बोधित किया। कॉ. सत्यनारायण, अनिल, दिव्या, सौम्या, सिन्धू, विवेक सहित अन्य कई छात्रों ने रैली में शिरकत की।

# शहीद चन्द्रशेखर आजाद को याद किया

**दुर्ग ( छ.गढ़ ) :** आजादी आनदोलन के क्रान्तिकारी शहीद चन्द्रशेखर आजाद जयंती 23 जुलाई को छात्र संगठन ऑल इण्डिया डीएसओ की जिला दुर्ग कमेटी द्वारा पूरे सम्मान के साथ मनायी गई। यहां आजाद चौक कसाराडीह में सभा की गई। शुरूआत में आजाद की मूर्ति पर एआईडीएसओ के कार्यकर्ताओं व नागरिकों द्वारा माल्यार्पण किया गया। एआईडीवाईओ के छ.ग. राज्य इंचार्ज कॉ. विश्वजीत हारोडे ने कहा कि शहीद चन्द्रशेखर आजाद का जीवन संघर्ष छात्र–नौजवानों के लिए प्रेरणादायक है। उन्होंने अपील की कि हर तरह के शोषण, अन्याय, उत्पीड़न, जनजीवन की तमाम समस्याओं के समाधान हेतु जोरदार आन्दोजन निर्मित करें।

सभा को प्रोफेसर रजनीश उमरे ने सम्बोधित किया। संचालन कॉ. आत्मा राम साहू ने किया। शहीद चन्द्रशेखर आजाद जिन्दाबाद, क्रान्तिकारियों के जन्म दिवस और शहीदी दिवस पर रष्ट्रीय अवकाश घोषित करो, क्रान्तिकारियों को इतिहास में उचित स्थान दो, क्रान्तिकारियों की जीवनियों को पाठ्यक्रम में शामिल करो, आदि नारों के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

भूवनेश्वरी और नीतू साहू के नेतृत्व में साइन्स कॉलेज में भी शहीद चन्द्रशेखर आजाद को याद किया गया। सभा में लगभग 40 छात्राएं शामिल हुई।

**भिवानी ( हरियाणा ) :** शहीद चन्द्रशेखर आजाद जयंती के अवसर पर 23 जुलाई को ऑल इण्डिया डीएसओ की स्थानीय कमेटी द्वारा यहां दिनोद गेट से सराय चौपटा, घंटा घर होते हुए नेहरू पार्क तक जुलूस निकाला गया जहां पहुंच कर यह यादगार सभा में तब्दील हो गया। आजाद की तस्वीर पर पुष्पांजली अर्पित की गई। सभा की अध्यक्षता संगठन के स्थानीय अध्यक्ष रूपेश यादव ने की और मुख्य वक्ता ऑल इण्डिया डीएसओ के कार्यलय सचिव कॉ. चंचल घोष थे। उन्होंने शहीद चन्द्रशेखर आजाद के जीवन–संघर्ष और आजादी आन्दोलन में उनकी शानदार भूमिका पर चर्चा की। उन्होंने कहा कि आजादी आन्दोलन की समझौताहीन क्रान्तिकारी धारा के महान योद्धा चन्द्रशेखर आजाद जैसे क्रान्तिकारियों ने मानव द्वारा मानव के शोषण से मुक्ति पाने के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया लेकिन उनका सपना आज भी अधूरा है। आज भी हमारे देश में भ्रष्टाचार, महंगाई, बेरोजगारी, महंगी शिक्षा जैसी समस्याएं मौजूद हैं। उनसे सीख लेकर वर्तमान में हर तरह के शोषण–जुल्म के खिलाफ आगे आने का लोगों से उन्होंने आह्वान किया।

सभा में दीपक सैनी, पवन, कमल, रवि, संदी, राजेश आदि भी उपस्थित थे।

**आरोन ( म.प्र. ) :** शहीद चन्द्रशेखर आजाद जयंती की पूर्वसंध्या पर 22 जुलाई को एसयूसीआई(सी) की स्थानीय कमेटी द्वारा मशाल जुलूस निकाला गया। तेज बारिश की वजह से यह सभा में तब्दील हो गया। सभा में बड़ी संख्या में पार्टी कार्यकर्ता मौजूद थे। सभा में पार्टी के स्थानीय प्रभारी कॉ. मनीष श्रीवास्तव ने बात रखी। उन्होंने आजादी आन्दोलन की समझौताहीन क्रान्तिकारी धारा के महान योद्धा चन्द्रशेखर आजाद के जीवन–संघर्ष और आजादी आन्दोलन में उनकी शानदार भूमिका पर चर्चा की। उन्होंने कहा कि मानव द्वारा मानव के शोषण से मुक्ति का उनका सपना आज भी अधूरा है। उनसे सीख लेकर वर्तमान में हर तरह के शोषण–जुल्म के खिलाफ आगे आने का लोगों से उन्होंने आह्वान किया। शहीद चन्द्रशेखर आजाद के जीवन संघर्ष की गाथा और उनका क्रान्ति का पैगाम जन–जन तक पहुंचाने के लिए युवा संगठन डीवाईओ ने शहर के विभिन्न जगहों पर कार्यक्रम किये।

# पूरे सम्मान के साथ मनायी प्रेमचंद जयंती

**मुरादाबाद ( उ.प्र. ) :** 31 जुलाई को यहां चित्रगुप्त इंटर कॉलेज में साहित्यिक चर्चा व कवि सम्मेलन का आयोजन कर प्रेमचंद जयंती पूरे सम्मान के साथ मनायी गई। कार्यक्रम का आयोजन ऑल इण्डिया डीएसओ, ऑल इण्डिया डीवाईओ और साहित्यिक संस्था 'दस्तक' ने संयुक्त रूप से किया था। कार्यक्रम की अध्यक्षता ऑल इण्डिया डीवाईओ के प्रदेशाध्यक्ष कॉ. हरकिशोर सिंह ने की और संचालन ऑल इण्डिया डीएसओ की जिला अध्यक्ष कॉ. ऋतु चौधरी ने किया।

कार्यक्रम की शुरूआत में मोनिका रुहेला, साक्षी कौशिक, लिपि सिंह, अनु त्यागी, तुलिका सिंह, अंशिका सक्सैना, अरुणेश यादव, अदिति सिंह, राशिद अली, शिवांग और बबीता सिंह ने कविताएं व क्रांतिकारी गीत प्रस्तुत किये। इसके बाद साहित्यिक चर्चा में नवगीतकार माहेश्वर तिवारी, शिशुपाल ''मधुकर'', के.जी.के. कॉलेज के हिन्दी विभाग के प्रोफेसर डॉ. चन्द्रभान यादव, ऑल इण्डिया डीवाईओ के जिला अध्यक्ष विनोद विग, सचिव मौ. गौरी, ऑल इण्डिया डीएसओ के जिला सचिव फैज खान ने अपने विचार रखे।

वक्ताओं ने कहा कि कि हम ऐसे समय में प्रेमचंद को याद कर रहे हैं जब शोषण–उत्पीड़न से तबाह लोगों की एकता को तोड़ने वाली, साम्प्रदायिक व जात–पात के भेदभाव को बढ़ावा देने वाली ताकतें सिर उठा रही हैं। शराब, जुआ, अश्लीलता व अपसंस्कृति से समाज खतरे में है। महिलाओं, यहां तक कि छोटी–छोटी बच्चियों पर भी बलात्कार जैसे घिनौने अपराध हो रहें हैं। प्रेमचंद ने उस जमाने में अपने जीवन और रचनाओं से न केवल साम्राज्यवादी शोषण–जुल्म के खिलाफ बल्कि सामंती समाज में व्याप्त कुरीतियों–जातपात, साम्प्रदायिकता, अंधविश्वास, रूढ़िवाद के खिलाफ जोरदार आवाज उठायी थी। उनका साहित्य आज भी प्रासंगिक है। वर्तमान शासक प्रेमचंद की यादों को जनमानस से मिटाना चाहता है। पाठ्यक्रमों से उनकी रचनाओं को हटाया जा रहा है। मौजूदा शासन व्यवस्था समाज को और प्रगति की ओर नहीं ले जा सकती इसे टिकाये रखने के लिए शासक वर्ग द्वारा संस्कृति पर लगातार हमले किये जा रहे हैं। इन हमलों का मुकाबला करने के लिए हमें प्रेमचंद साहित्य पढ़ने की और भी ज्यादा जरूरत है।

कार्यक्रम के अंत में कवि सम्मलन हुआ। इसमें मुख्य रूप से अशोक विश्नोई, बवनीश चौहान, ओंकार सिंह ''आंकार'', उदय प्रकाश अस्त, अंकित कुमार अंक, डॉ. मीना नकवी, योगेन्द्र वर्मा ''व्योम'', रघुराज सिंह ''निश्चल'', रामदत्त द्विवेदी, रामसिंह निशंक, विकास ''मुरादाबादी'', विवेक ''निर्मल'', प्रेमसिंह ''वृजवासी'', राजीव प्रखर ने अपनी औजस्वी रचनाएं प्रस्तुत की। महाराज हरिश्चंद्र डिग्री कॉलेज के कला संकाय के अध्यक्ष प्रो. नरेन्द्र सिंह ने प्रेमचंद का स्कैच बनाया। कार्यक्रम में काफी लोगों ने भाग लिया।

**सागर ( म.प्र. ) :** ऑल इण्डिया डीएसओ, सागर जिला समिति द्वारा 31 जुलाई को हिन्दी और उर्दू के महान साहित्कार मुंशी प्रेमचंद के जन्म दिवस पर यहां तिली बाघराज वार्ड स्थित कार्यालय में एक विचार गोष्ठी की गई। गोष्ठी के मुख्य वक्ता कॉ. रामावतार शर्मा ने प्रेमचंद के व्यक्तित्व व विचारों को सही–सही समझने और अपने जीवन में आत्मसात करने पर बल दिया। प्रेमचंद की रचनाओं का हवाला देते हुए उन्होंने दिखाया कि आज जनजीवन की दुर्दशा उनके जमाने से भी कहीं ज्यादा है जो साफ नजर आती है। समाज के क्रान्तिकारी परिवर्तन से ही मौजूदा सभी समस्याओं का निराकरण सम्भव है। गोष्ठी की अध्यक्षता अशोक कुशवाहा ने की। प्रेमचंद के साहित्य का क्रमिक विकास दिखाते हुए उन्होंने कहा कि प्रेमचंद साहित्य की आज भी प्रासंगिकता है। गोष्ठी में राजू पटेल व गणेश पटेल ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

# जनता की ज्वलंत मांगों को लेकर धरना

**नई दिल्ली :** महंगाई, बिजली–पानी के निजीकरण व दरों में बढ़ोतरी, ठेकेदारी प्रथा, नशाखोरी, अश्लील प्रसारण तथा महिलाओं व बच्चियों पर बढ़ते अपराधों के खिलाफ 31 जुलाई को एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) की शालीमार बाग इकाई की ओर से ए.एल मार्किट में धरना दिया गया। धरने में कई ब्लाकों से महिलाओं, नौजवानों तथा आम नागरिकों ने बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया।

धरने को संगठन की शालीमार इकाई की इंचार्ज नीतू खन्ना, वृंदा दास, कुलदीप, सुरेश सैनी, ज्योतिभूषण तथा शालीमार बाग–पीतमपूरा लोकल कमेटी की इंचार्ज प्रकाश देवी के अलावा एसयूसीआई(सी) की दिल्ली राज्य कमेटी सदस्य कॉ. मैनेजर चौरसिया ने सम्बोधित किया। वक्ताओं ने कहा कि सरकार पहले बीजेपी और बाद में कांग्रेस की जनविरोधी पूंजीपरस्त नीतियों के चलते दिल्ली की जनता का जीना दूभर हो गया था। आवश्यक वस्तुओं, बिजली–पानी की कीमतों में भारी वृद्धि ने लोगों में भयंकर क्षोभ है। आम आदमी पार्टी के केजरीवाल ने भी बिजली–पानी के दाम कम करने, महंगाई, भ्रष्टाचार पर रोक लगाने, ठेका मजदूरों को पक्का करने, पर्याप्त मात्रा में स्कूलों व अस्पतालों की व्यवस्था करने की बजाय त्यागपत्र देकर दिल्ली की जनता को मझधार में छोड़ दिया और दिल्ली में राज्यपाल का शासन यानी परोक्ष रूप से केन्द्र सरकार का शासन लागू हो गया। बीजेपी ने केन्द्र में सत्तासीन होते ही रेल किरायों में भारी वृद्धि कर दी, पेट्रोल–डीजल के दाम बढ़ा दिए। आवश्यक वस्तुओं की कीमतों में बेतहाशा वृद्धि हुई है। असल में अच्छे दिन तो एकाधिकारी पूंजीपतियों, कालाबाजारियों, बिचौलियों और जमाखोरों के आए हैं जिन्होंने मोदी को गद्दीनशीन करने के प्रचार में करोड़ों रुपये लगाए थे जिसकी अब वे पाई–पाई वसूल रहे हैं। इस लूट का सारा बोझ जनता के कंधों पर लादा जा रहा है। चाहे कांग्रेस सत्ता में रहे या बीजेपी, दोनों ही देशी–विदेशी पूंजीपतियों के हित में भूमण्डलीकरण–उदारीकरण–निजीकरण की नीतियों को ही लागू करती आई हैं। वक्ताओं ने कहा कि ऐसे में जनता के सामने जनआन्दोलन ही रास्ता बचता है।

सभा का संचालन कॉ. सुमन चौहान ने किया। धरने के बाद जनसमस्याओं से सम्बन्धित एक ज्ञापन शालीमार बाग निगम पार्षद श्रीमती ममता नागपाल को सौंपा गया।

## फासीवाद...

( पृष्ठ 2 का शेष )

व्यक्तिगत तौर पर ईमानदार हों या बेईमान हों यह इतना बड़ा सवाल नहीं है, इसके जरिए वे असल में पूरे देश के सांस्कृतिक परिवेश को, राष्ट्र के नैतिक चरित्र को ध्वस्त करने का जो बुर्जुआ वर्ग का षडयंत्र है उसी को सफल करने में सहायता कर रहे हैं।

यदि स्थिति यह हो तो राष्ट्र की नैतिकता ध्वस्त होगी ही और नैतिकता को छोड़ कर क्रान्ति नहीं हो सकती है। जो सोचते हैं कि लोगों की आर्थिक दुर्दशा और उनके ऊपर अत्याचार-उत्पीड़न बढ़ने से अपने आप क्रान्ति हो जाएगी–मैं कहूँगा वे मूर्ख हैं। वे जानते नहीं हैं कि किसी भी देश में कभी भी भिखारियों ने क्रान्ति नहीं की है। क्रान्ति करती है शोषित जनता। इस बात का एक मायने है। लम्पट लोग क्रान्ति नहीं करते हैं बल्कि सभी देशों में लम्पट लोग बुर्जुआ वर्ग के द्वारा, फासीवादियों के द्वारा क्रान्ति के खिलाफ प्रतिक्रिया की वाहिनी के रूप में इस्तेमाल किए जाते रहे हैं। इसीलिए मार्क्स से लेकर लेनिन, माओ त्से तुंग तक सभी को कहना पड़ा कि आर्थिक दुर्दशा की वजह से सर्वहाराओं के अन्दर जो लम्पट बन रहे हैं वे हमारे कोई नहीं हैं, वे सर्वहारा क्रान्तिकारी नहीं हैं। क्रान्तिकारी सर्वहारा को क्रान्ति के लिए इन लम्पटों के खिलाफ लड़ना पड़ता है। इसीलिए अभाव रहने से ही इसके जरिए क्रान्ति फूट नहीं पड़ती है। जो फूट पड़ता है वह विक्षोभ है। इसके द्वारा आखिर तक शोषकों का ही ज्यादा फायदा होता है। रास्ता भ्रांत, नेतृत्व गलत, सिद्धांत गलत, क्रान्ति के सम्बंध में स्वच्छ राजनैतिक दृष्टिकोण नहीं ऐसी असंगठित जनता की लड़ाई जब संगठित राजसत्ता के दमन के सामने परास्त होती है तब आता है पराजय का मनोभाव। लोगों में संघर्ष का जो जज्बा था, आवेग था वह इस तरह निशेषित हो जाने के फलस्वरूप हताशा और पराजय का मनोभाव जनआन्दोलनों को, भले ही कुछ समय के लिए हो, ग्रसित कर लेता है। अत: यह शोषक वर्ग के लिए सबसे सुविधाजनक होता है। इसका फायदा उठा कर शोषक वर्ग अपने काम को सुव्यवस्थित कर लेता है। अपनी शासन व्यवस्था और राजनैतिक संगठन को और भी कुछ हद तक मजबूत कर लेता है।....

आप जानते हैं, अनेक लाल दुर्ग पूरे देश में इस तरह कायम हुए थे मानो वे किसी एक विशेष पार्टी या संगठन की जागीर हैं–वहाँ दूसरे किसी को घुसने नहीं दिया जाएगा। तो मैं कहता हूँ, कोई अच्छी बात भी यदि कहे तो क्योंकि वह पार्टी का आदमी नहीं है, क्योंकि यह हमारा किला है, इसी वजह से उसको घुसने नहीं दूँगा या उसकी सही बात पर भी ध्यान नहीं दूँगा यह कैसी बात है? समालोचना हो सकता है कि मुक्ति आन्दोलन के ही काम आये, लेकिन क्योंकि किला बना लिया गया है, इसी वजह से कान में तेल डाल लेना क्या सही बात हुई? नेतागण कह रहे हैं, विभाग-विभाग में किले कायम करो–इसका मायने क्या ये है कि उसमें बुद्धि भी प्रवेश न कर सके। इसका परिणाम क्या हुआ? इसके चलते अंधता बढ़ रही है। अंधता की मनोवृत्ति फासिस्ट सुलभ है–यह बुर्जुआ वर्ग की ही सहायता करती है। श्रमिक आन्दोलन, क्रान्तिकारी आन्दोलन अज्ञानता का कारोबार नहीं है। वे युक्ति, तर्क-वितर्क, आलाप आलोचना और मतादर्श के संघर्ष में विश्वास रखते हैं; क्योंकि वे सत्यानुसंधानी हैं। आलोचना, युक्ति, तर्क-वितर्क से वे घबराते नहीं हैं। वही आलोचना को दबाना चाहते हैं, निरुत्साहित करना चाहते हैं जो गलत जगह पर हैं, जो प्रतिक्रियावादी हैं। इसीलिए वे कभी अनुशासन की दुहाई देकर या कभी एकता की दुहाई देकर, किले-विले कायम करने होंगे ये सब बातें कह कर असल में वे अलाप चर्चा-बहस को दबा देना चाहते हैं। वे तर्क-वितर्क से डरते हैं, युक्ति विश्लेषण से डरते हैं। वे किसी आदमी को भाषण में विश्लेषण करते हुए देखने पर मजाक उड़ाते हुए कहते हैं–क्लास ले रहा है। मानो सिर्फ उत्तेजित करने के लिए ही भाषण करने की जरूरत है। इसके बाद उत्तेजित हो कर लोग यहाँ वहाँ छिटपुट लड़ाई-भिड़ाई में मरे और मरती है तो जनता ही, नेता तो नहीं मरते हैं। ये सब नेतागण क्या कभी कहीं गोली खा कर मरे हैं? वे नहीं मरते हैं। क्रान्तिकारी कभी-कभी मरते हैं लेकिन इन सब नेताओं को तो पुलिस 'सर' 'सर' कहते हुए सिर पर उठाए रखती है, चारों तरफ से घेर कर रखती है। इसीलिए ये सब नेतागण सिर्फ लोगों को उत्तेजित करते हैं और लोग उत्तेजित हो कर जितना मरें यह बल्कि इन सब नेताओं के लिए अच्छा है। दो एक के शहीद दिवस मनाकर शासक पार्टी को गाली-गलौज करके चुनाव की वैतरणी पार करने का कुछ माल-मसाला जुट जाता है इन सब नेताओं का। ...

संघर्ष आप लोगों को करना ही होगा। बात ऐसी नहीं है कि आप लोग लड़ेंगे नहीं। पेट बुरी बला है। आज यदि सोचें भी कि संघर्ष करने से कुछ नहीं होगा–दो दिन बाद ही फिर लड़ाई के मैदान में आप लोगों को उतरना ही होगा। इसी बीच इसका आभास हो रहा है। हजारों-हजार लोग जंग के मैदान में आएंगे, लड़ाई शुरू करेंगे लेकिन हालात में कोई बदलाव नहीं होगा। हालात बदलने के लिए उन्हीं तीन चीजों की जरूरत होगी–सही मूल राजनैतिक नजरिया, सही क्रान्तिकारी सिद्धान्त और सही क्रान्तिकारी पार्टी। यह यदि न रहे, रास्ता यदि गलत हो, तो ईमानदारी, कुर्बानी, संघर्ष आदि कुछ भी रहे आप आगे नहीं बढ़ पाएंगे। इसीलिए पुन: वही लेनिन की बात याद दिलाते हुए कहता हूँ–चाहे जितने भी जनवादी आन्दोलन करो, माँगों को लेकर चाहे जितना भी लड़ो, शहीद दिवस मनाओ, सीने का कितना ही रक्त बहा दो, हड़ताल और आन्दोलन में पुलिस के साथ कितना ही मुकाबला करो–आप लोग जो गुलाम हैं वे गुलाम ही रह जाएंगे। जो पूँजीवाद है वह पूँजीवाद ही कायम रहेगा, शोषण निर्बाध जारी रहेगा। दस-बीस रुपये तनखा हो सकता है बढ़ जाएगी। लेकिन बाजार में सामानों के दाम ऐसे ही ज्यादा हैं, इससे भी कई गुना ज्यादा महंगाई बढ़ जाएगी। फिर तनखा बढ़वाने के लिए लड़ोगे, खून बहाओगे, तनखा पाँच रुपये बढ़ेगी, लेकिन फिर सामानों के दाम बढ़ जाएंगे। सिर्फ इतना ही नहीं–यह अनिश्चितता, उद्देश्यहीनता नैतिक जीवन में भी पतन ला देगी। जिस सुख का सपना लेकर परिवार का पालन-पोषण कर रहे हो, परिवार में आपके अत्यंत घनिष्ट सम्बंधों पर भी मौजूदा समाज की जो सामाजिक व्याधियाँ हैं उनकी छाया पड़ेगी ही, वे सब इसमें घुस जाएंगी। आपने सुख की कल्पना करते हुए, अनेक सपने लेकर जो घर बसाया था, उस घर में जाकर देखेंगे कि वह घर-संसार भी बचा नहीं, उसमें प्यार-मोहब्बत नहीं है। जिन बाल-बच्चों के लिए अनेक कष्ट उठाये, यहाँ तक कि किसी बात की भी कोई परवाह नहीं की, देखेंगे कि उनमें से एक-एक महाशय एक-एक तरह का नमूना है –कोई तो सिनेमा के हीरो का चेला, कोई कहीं के किसी खिलाड़ी का चेला बन बैठा है। अर्थात् यूँ कहें कि आप अपने आत्मीय स्वजनों को लेकर एकदम निर्लिप्त भाव से–कभी किसी तीन-पाँच में नहीं पड़े, झंझट-झमेले में नहीं पड़े, राजनीति में नहीं आये, किसी में भी भाग नहीं लिया, सिर्फ नौकरी-नौकरी की और खाने-पीने व सोने में लिप्त रहे फिर भी खुद को इसके चंगुल से बचा नहीं पाएंगे। सामाजिक समस्या का भूत आपके घर में घुस जाएगा। आपके व्यक्तिगत जीवन को विषाक्त कर देगा। प्यार-मोहब्बत खत्म कर देगा। स्नेह-ममता को ध्वस्त कर देगा। अत: बचने के लिए संघर्ष तो आपको करना ही पड़ेगा। और यह संघर्ष करना होगा क्रान्ति के रास्ते। क्रान्ति के रास्ते का मतलब 'क्रान्ति' 'क्रान्ति' कह कर सिर्फ चिल्लाना नहीं है। क्रान्ति का सही स्तर, देश के वर्ग विन्यास के बारे में सही सुस्पष्ट धारणा को आधार बना कर, सही क्रान्तिकारी पार्टी के नेतृत्व में मजदूरों को यदि संगठित कर सके, उपयुक्त राजनैतिक शिक्षा से यदि शिक्षित कर सके तभी आप जनता की राजनैतिक शक्ति को जन्म दे सकेंगे, राजनैतिक क्षमता को पैदा करने में सक्षम होंगे एवं राजनैतिक क्षमता के अधिकारी होंगे। तभी आएगी वह शुभ घड़ी जब भारतवर्ष के करोड़ों करोड़ उत्पीड़ित लोग क्रान्ति का मुँह देखेंगे। इससे पहले तक सिर्फ विक्षोभ और पराजय। सिर्फ विस्फोट और पराजय। इसके चंगुल से मुक्ति, समाज की मुक्ति, लोगों की मुक्ति का रास्ता एक ही है–वह है क्रान्ति का रास्ता। इसके अलावा और कोई रास्ता नहीं है।

(17 मार्च 1974 को श्रमिक सभा में दिया गया भाषण)

## कॉमरेड कृष्ण चक्रवर्ती का भाषण

( पृष्ठ 4 का शेष )

तरह लड़ेंगे। स्थिति के कारण जीतना सम्भव नहीं भी हो सकता है। लेकिन ऐसा कहना ठीक नहीं है कि हम तो जीतेंगे नहीं, हम तो सिर्फ प्रचार करेंगे। उससे प्रचार भी सही ढंग से नहीं होता है और ऐसा रवैया ठीक भी नहीं है। चुनाव क्या है? चुनाव एक वर्ग-संघर्ष है। यह बात कॉमरेडों को अच्छी तरह समझ लेनी चाहिए कि यह वर्ग-युद्ध है। पूँजीपति वर्ग शासन अपने हाथ में रखने के लिए बहुत तरह का प्रचार करके और हथकण्डे अपना कर जनता को छलता है, गुमराह करता है। लेकिन यह एक संघर्ष है। धनी किसान, बड़े-बड़े व्यापारी, सरमायादार, कारखानों के मालिक, उद्योगपति चाहे शहर के हों या गाँव के, वे ज्यादा से ज्यादा 10 प्रतिशत होंगे। उनकी लड़ाई किसके साथ है? इन 10 प्रतिशत सरमायादारों की लड़ाई है जो कृषि मजदूर, औद्योगिक मजदूर, कारखाने के मजदूर और देहात के मजदूर, छोटे किसान, मध्यम किसान, छोटे कर्मचारी, शिक्षक, अध्यापक, डॉक्टर, आदि सारी शोषित जनता मिला कर 90 प्रतिशत बनते हैं उनके खिलाफ। यदि यह जनता सचेत हो जाये, संगठित हो जाये, वर्ग-संघर्ष को समझ ले तो दुश्मन 10 प्रतिशत पूँजीपतियों के नुमायंदे न सिर्फ चुनाव में जीत नहीं पायेंगे, क्रान्ति भी हो जाएगी। तब चुनाव में लोगों को हमें यह दिखाना चाहिए कि यह शोषित जनता और शोषकों के बीच लड़ाई है। हम शोषित जनता की तरफ से आये हैं। चुनाव में यदि हम हारे तो आप हारे। आप कहते हो कि आप कैसे जीतेंगे। हम तो वोट देना चाहते हैं लेकिन आप तो जीतेंगे नहीं। उनसे कहिए आप यदि हमें वोट देंगे तो हम हारेंगे क्यों? यह सीधी सी बात है। कोई पार्टी सिर्फ अपने पार्टी मेम्बरों के वोटों से नहीं जीतती है चाहे कांग्रेस हो या बीजेपी। आप लोग वोट देते हैं तभी तो जीतती है। आप यदि हमें वोट दें तो हम ही जीतेंगे, वे कैसे जीतेंगे? यह चेतना आपको हासिल करनी है कि यह आपका अपना काम है, आपका अपना संघर्ष है, आपकी ही लड़ाई है। हम जिस तरह लड़ रहे हैं, आओ, आप भी लड़ो, दुश्मन को हराओ। ये बातें उठानी पड़ेंगी। बाकी राजनैतिक विचार तो रखेंगे ही। प्रचार साहित्य उनमें जाएगा। यह सब होगा। लेकिन मूल में हमें दिखाना चाहिए कि यह लड़ाई है पूँजीपतियों से, अमीरों से शोषित जनता की, गरीबों की कि कौन शासन करेंगे। वे आपको प्रचार के द्वारा गुमराह करेंगे, पैसा और हजारों तरह के प्रलोभन, लालच देंगे। क्या इस लालच में आप अपने हित के खिलाफ चले जाएंगे? दुश्मन को वोट देकर जिताएंगे या हमारी पार्टी जो आपकी अपनी पार्टी है, उसे जिताएंगे? आपका हित और उनका हित, इन दो हितों की लड़ाई है। यह बात हमें उनके बीच ले जानी है।

आखिरी बिन्दु यह है कि सीपीआई-सीपीएम या कोई अन्य वामपंथी पार्टी हो, जनवादी पार्टी हो संयुक्त मोर्चा बना कर आन्दोलन करने के लिए आगे नहीं आ रही है। यदि कोई हमारे पास आती है तो अच्छी बात है। न भी आये तो हमें उनको अप्रोच करना चाहिए, बोलना चाहिए कि आओ, एक साथ लड़ें। प्रतिक्रियावादी ताकतें जो इतने भयंकर रूप में उभर रही हैं, क्या आप उनका मुकाबला नहीं करना चाहते हो? यदि चाहते हो तो आओ ,एक साथ आओ। लेकिन हमारी ताकत नहीं दीखे तो वे हमारे साथ नहीं आयेंगी। अपनी ताकत को यदि हम दिखा सके तो भरोसा करके वे हमारे साथ आ भी सकते हैं। इसीलिए राज्य कमेटी का एक फैसला है : 31 अगस्त को रोहतक में एक राज्य स्तरीय रैली होगी व सभा होगी। इसमें अपने-अपने जिला से आपने ज्यादा से ज्यादा लोग लाने हैं ताकि विशाल प्रदर्शन हो, बड़ा जुलूस हो, बड़ी सभा हो। इससे दूसरी पार्टियों को भी एक भरोसा हो जाएगा, उससे भी बड़ी बात यह है कि आम जनता में भरोसा पैदा होगा। आम लोग देख रहे हैं कि कोई वामपंथी पार्टी तो है नहीं। वे देखें कि एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) ही एकमात्र वामपंथी ताकत के रूप में उभर कर आ रही है। यही भविष्य है। यही भरोसा है। ऐसा एक माहौल तैयार करना है। सिर्फ प्रदर्शन में लोगों को लाना ही नहीं बल्कि हर जिले में नुक्कड़ सभाएं, पर्चा वितरण, दीवार लिखाई, पोस्टरिंग से प्रचार करके ऐसा माहौल तैयार कर दें। अखबार यदि खबर देता है तो अच्छी बात है लेकिन न भी दे तो 31 अगस्त को रोहतक में एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) का एक बड़ा जुलूस हो रहा है यह प्रचार हो जाना चाहिए। जगह-जगह यह प्रचार होने से माहौल तैयार होगा। इससे प्रांतीय रैली भी हो जाएगी और चुनाव का भी बहुत सारा काम इसी में हो जाएगा। कुछ खर्चा जरूर होगा, इस खर्चे में जहां रैली का प्रचार होगा, वहीं चुनाव का भी तो प्रचार हो जाएगा। क्योंकि यह सिर्फ एक जुलूस ही नहीं होगा, बल्कि जनता की तमाम मांगों को लेकर ही तो यह कार्यक्रम होगा। जनता में वे सब मुद्दे चले जाएंगे। भूमि अधिग्रहण के खिलाफ, किसान-मजदूरों की मांगों को लेकर, शिक्षा के व्यापारीकरण के खिलाफ छात्रों की मांग को लेकर, सब को रोजगार देने की नौजवानों की मांग को लेकर, इसी तरह सरकारी कर्मचारियों, आंगनवाड़ी वर्करों-हैल्परों, आशा, मिड डे मील कर्मियों की मांगों को लेकर, भवन निर्माण कारीगर-मजदूरों की मांगों को लेकर, जनता की मांगों को लेकर जगह-जगह प्रचार होने से जनता में यह बात फैल जाएगी। यह है राज्य कमेटी की परिकल्पना। मेरा मानना है कि यह सही है। इसमें सभी कॉमरेडों को तन-मन-धन से जुटना जाना है और इसे सफल बनाना है। अत: मैं अनुरोध नहीं करूंगा बल्कि मैं कहूंगा कि इसे सफल करने का काम सभी को फर्ज के रूप में लेना है कि हम करेंगे, हम हरियाणा की जनता को दिखायेंगे कि सही रास्ता क्या है, किस रास्ते मुक्ति मिलेगी। इसलिए मैं समझता हूँ कि विषय स्पष्ट हो गया। कॉमरेड शिवदास घोष लाल सलाम!

R.N.I. No.- 43022/85
P.R.No.-DL(C)-01/1123/2012-2014
Posting at IPMBC on 7–8 and 22–23 Fortnightly, Date of Printing :5 August, 2014



# सिक्किम के छात्रों की जीत पर एआईडीएसओ ने दी बधाई

23 जुलाई 2014 को एआईडीएसओ के महासचिव कॉ. अशोक मिश्रा ने निम्नलिखित बयान जारी किया :

''इस साल बीए/बीएससी प्रथम वर्ष के दाखिलों के दौरान सिक्किम के सरकारी कॉलेजों में दाखिला फीस में छह गुना वृद्धि की घोषणा कर दी गई। घोषणा के तुरन्त बाद इस बेतहाशा फीस वृद्धि के खिलाफ 15 जुलाई से टेडोंग गर्वनमेंट कॉलेज गंगटोक के छात्रों ने कॉलेज आफिस के सामने प्रदर्शन की शक्ल में स्वत:स्फूर्त आन्दोलन छेड़ दिया। एसडीएफ-नीत राज्य सरकार की पुलिस ने छात्रों पर निर्मम लाठीचार्ज, आंसू गैस और रबर बुलैट से प्रहार करना शुरू कर दिया। तमाम आक्रमणों का मुकाबला करते हुए आन्दोलन जारी रहा। आस-पास के संस्थानों के छात्र और आम लोग इस आन्दोलन में शामिल हो गए। इस आन्दोलन के समर्थन में लोगों द्वारा स्वत:स्फूर्त ढंग से पथ अवरोध, हड़ताल इत्यादि की गई जो 16 से 18 जुलाई तक जारी रही। फीस बढ़ोतरी वापस लेने की मांग के साथ-साथ छात्रों पर बर्बर आक्रमण करने के दोषी एसपी और अन्य पुलिस अफसरों को हटाने और सख्त सजा देने की मांग भी यह आन्दोलन उठाता रहा। आन्दोलन के बढ़ते दबाव के चलते 22 जुलाई को सिक्किम सरकार को घोषणा करनी पड़ी कि सिक्किम के सरकारी संस्थानों में स्कूल से लेकर कॉलेज स्तर तक शिक्षा के लिए कोई ट्यूशन फीस नहीं ली जाएगी। हमारा संगठन एआईडीएसओ छात्रों के साथ-साथ सिक्किम के लोगों के बहादुराना संघर्ष की इस शानदार जीत का खुले दिल से अभिनन्दन करता है। एआईडीएसओ का मानना है कि यह जीत देश के अन्य भागों में भी फीस वृद्धि और शिक्षा के निजीकरण-व्यापारीकरण के खिलाफ चल रहे आन्दोलनों को भी प्रेरित करेगी।

# महिलाओं पर बढ़ते अपराधों के खिलाफ सम्मेलन

**मुरादाबाद (उ.प्र.) :** महिलाओं व बच्चों पर लगातार बढ़ते जा रहे अत्याचार-अपराधों के खिलाफ यहाँ नगर निगम सभागार में 20 जुलाई को ऑल इण्डिया महिला सांस्कृतिक संगठन (एआईएमएसएस) की ओर से जिला स्तरीय महिला सम्मेलन का आयोजन किया गया। सम्मेलन की अध्यक्षता श्रीमती बाल सुन्दरी तिवारी ने की और संचालन श्रीमती भावना सिंह ने किया।

सम्मेलन की मुख्य वक्ता थी संगठन की प्रदेश संयोजिका श्रीमती रश्मि मालवीय। महिलाओं के साथ हो रहे बलात्कारों और दरिंदगी पर चिंता जताते हुए उन्होंने इनकी तुरंत रोकथाम करने की मांग की। उन्होंने कहा कि सरकारों का रवैया भी घोर महिला-विरोधी, जनविरोधी है जिसकी वजह से वे अपराधों की रोकथाम करने के प्रति उदासीन हैं। इस तरह के मामलों में पुलिस खुद बेखौफ अपराधी की भूमिका निभाती है। न्याय प्रक्रिया भी इतनी धीमी है कि अपराधियों को सजा मिलनी ही मुश्किल हो जाती है। ऐसी स्थिति में महिलाओं को एकजुट होकर, संगठित होकर अपने सम्मान की रक्षा की लड़ाई खुद ही लड़ाई लड़नी होगी और अपने हक हासिल करने होंगे। तभी इन अपराधों और बुराइयों की जड़ ये शराबखोरी, अश्लील सिनेमा, साहित्य, गानें, सीरियल, विज्ञापन, पार्नोग्राफी और महिलाओं के प्रति पुलिस-प्रशासन के क्रूर व्यवहार पर रोक लग सकती है।

सम्मेलन में माहेश्वर तिवारी, डॉ. चन्द्रभान यादव, संगठन की लखनऊ से आयीं राज्य स्तरीय नेत्री वंदना सिंह मुख्य अतिथि थीं। सम्मेलन के आयोजन में श्रीमती माया राजपूत, सुषमा त्यागी, दीपा गौतम, कल्पना गौतम, कमलेश पाल, शोभा माथुर, चंचल सिंह, मनीला जेम्स, मंजू मेहता, अनिता सिंह, प्रेमलता मलाषी, आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किये। सम्मेलन में आन्दोलन को आगे बढ़ाने के लिए 11 सदस्यीय जिला कमेटी गठित की गई जिसकी अध्यक्ष श्रीमती बालसुन्दरी तिवारी और सचिव भावना सिंह को चुना गया।

# ऑल इण्डिया महिला सांस्कृतिक संगठन का दिल्ली में आयोजित शिक्षण शिविर

**शिविर को सम्बोधित करते हुए कॉमरेड छाया मुखर्जी**

**दिल्ली :** ऑल इण्डिया महिला सांस्कृतिक संगठन (ऑल इण्डिया एमएसएस) दिल्ली राज्य कमेटी द्वारा कालकाजी में 28.29 जुलाई को दो दिवसीय शिक्षण शिविर लगाया गया। इसका संचालन संगठन की अखिल भारतीय अध्यक्ष कॉमरेड छाया मुखर्जी ने किया। शिविर की शुरूआत सर्वहारा के महान नेता कॉमरेड शिवदास घोष की तस्वीर पर माल्यार्पण से हुई। इसमें संगठन की दिल्ली के विभिन्न इलाकों से आई कार्यकताओं व समर्थकों ने हिस्सा लिया। शिविर का प्रथम सत्र सांस्कृतिक कार्यक्रम से शुरू हुआ। इसमें जनगीत प्रस्तुत किये गये। शिविर में शिरकत करने वाली महिलाओं ने नारी-मुक्ति के सवाल पर कॉमरेड तापस दत्ता का भाषण सामूहिक तौर पर पढ़ा जिसे व्यक्तिगत तौर पर भी पढ़ कर आने के लिए कहा गया था। अध्ययन के बाद आये सवालों पर दूसरे सत्र में चर्चा की गई।

दूसरे सत्र का विषय था 'वर्तमान राजनैतिक-सामाजिक परिस्थितियों में महिला आन्दोलन की भूमिका'। इस पर विभिन्न सवालों पर चर्चा की गई। कॉमरेड छाया मुखर्जी ने महिला मुक्ति आन्दोलन में महिलाओं को अग्रणी भूमिका निभाने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने सही समझदारी हासिल करने और संगठन को मजबूत बनाने पर बल दिया।

सभी प्रतिभागियों ने इस शिविर में हुई चर्चा-बहस में उत्साह के साथ खुल कर भाग लिया। संगठन की राज्य अध्यक्ष कुसुम सिंह एडवोकेट, कॉ. पुष्पा चमौली, राज्य सचिव रितु कौशिक और सचिवमण्डल सदस्या कॉ. सीता सिंह ने भी शिविर में अपने विचार रखे। इस अवसर पर एसयूसीआई(सी) के दिल्ली राज्य सचिव कॉ. प्रताप सामल और सचिवमण्डल सदस्य कॉ. प्राण शर्मा व रमेश शर्मा भी मौजूद थे।

इस दो दिन के शिविर के दौरान पार्क में व्यायाम और खेलकूद का भी आयोजन किया गया जिसमें सभी महिलाओं ने पूरे जोश और उत्साह के साथ भाग लिया। सर्वहारा के महान नेता कॉमरेड शिवदास घोष पर रचित गान के साथ शिविर का समापन हुआ।

# दिल्ली में आशा वर्कर्स के शिक्षण शिविर

**तुगलकाबाद :** शिविर को सम्बोधित करते हुए कॉ. मैनेजर चौरसिया

**दिल्ली :** एआईयूटीयूसी से सम्बद्ध दिल्ली आशा वर्कर्स एसोसिएशन द्वारा 5 जिलों उत्तर-पूर्वी, उत्तर-पश्चिमी, पूर्वी, पश्चिमी व दक्षिणी दिल्ली में एक-एक दिन के शिक्षण शिविर आयोजित किये गये। इनमें बड़ी संख्या में आशा वर्करों ने भाग लिया। इनकी अध्यक्षता एसोसिएशन के प्रदेश अध्यक्ष कॉ. मैनेजर चौरसिया ने की। इनमें एसोसिएशन की महासचिव ममता राव ने भी सम्बोधित किया। उन्होंने सभी डिस्पेंसरियों में आशा कर्मियों को एसोसिएशन की सदस्य बनाने और अपनी मांगों के लिए आन्दोलन तेज करने की अपील की। सभी जगहों पर महिला आन्दोलन की महान नेत्रियों के परिचय व विश्व सर्वहारा के महान नेताओं कार्ल मार्क्स, लेनिन व कॉमरेड शिवदास घोष के उद्धरणों की प्रदर्शनी भी लगाई गई।

**बवाना:** शिक्षण शिविर को सम्बोधित करते हुए कॉ. हरीश

इनमें आशा वर्करों ने अपनी समस्याएं रखी और चर्चा में हिस्सा लिया। एसोसिएशन के 15 सूत्री मांगपत्र पर दिल्ली सरकार की तरफ से भेजा गया जवाब पढ़ा गया जिसका शिविर में शामिल सभी ने एक स्वर में विरोध किया। एसोसिएशन की पांचों जिलों में इसकी कमेटियां बनाई गई। इन कमेटियों में उत्तर-पूर्वी जिले में कॉ. भंवरपाल को सलाहकार, अंशु शर्मा को संयोजक व सीमा भारद्वाज को सहसंयोजक, उत्तर-पश्चिमी जिले में कॉ. रामकरण को सलाहकार, निर्मला को संयोजक, पूर्वी दिल्ली में शिक्षा को संयोजक और दक्षिणी दिल्ली जिले में निर्वेश को संयोजक व राजन को सहसंयोजक बनाया गया।

शिक्षण शिविरों आन्दोलन के कार्यक्रमों पर भी चर्चा हुई। कॉ. मैनेजर चौरसिया ने कहा कि सरकार हमारे हक ऐसे ही देने वाली नहीं है। आन्दोलन के रास्ते ही इनको हासिल किया जा सकता है। हरियाणा, उ.प्र., कर्नाटक आदि राज्यों में हमारी सहयोगी आशा यूनियनों ने जोरदार आन्दोलन चलाये हैं। कुछ राज्यों में उन्होंने महत्वपूर्ण मांगें हासिल भी की हैं।

एआईयूटीयूसी के दिल्ली राज्य अध्यक्ष कॉ. हरीश त्यागी ने संगठन को मजबूत करने का आह्वान करते हुए कहा कि मजदूर वर्ग की सही विचारधारा और सही नेतृत्व के बिना सही जुझारू संगठन व आन्दोलन गठित होना सम्भव नहीं है। एआईयूटीयूसी जिसके नेतृत्व में दिल्ली आशा वर्कर्स एसोसिएशन का निर्माण हो रहा है, वही भारत के मेहनतकशों का एकमात्र सही क्रान्तिकारी मजदूर संगठन है, हमें सिखाता है कि मजदूर वर्ग का सामूहिक हित ही हमारा हित है। इसी भावना के साथ सभी आशा वर्करों को एसोसिएशन के साथ जोड़ना चाहिए। इन शिविरों ने आशा वर्करों में उत्साह व जोश का संचार किया।

सोशलिस्ट यूनिटी सेन्टर ऑफ इण्डिया (कम्युनिस्ट) की ओर से कॉ. सत्यवान द्वारा 3ए/38, डब्ल्यू.ई.ए., करोल बाग, नई दिल्ली-5 से संपादित व प्रकाशित तथा परम्परा प्रिंटिंग प्रेस, बी-70/83, इण्डस्ट्रियल एरिया, लॉरेंस रोड, दिल्ली-35 से मुद्रित, दूरभाष:011-25726631, Email: sarvaharadrishtikon@gmail.com; sarvaharadrishtikon@yahoo.com